साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No. : RAJHIN/2018/75539

www.mahisandesh.com

ISSN: 2581-9208

माही संदेश

दस्तक दिल तक

वर्ष : 3 | अंक : 5 | अगस्त : 2020 | पृष्ठ संख्या : 32 | मूल्य : ₹ 35/-

बहादुर फौजियों की
सादी सी कहानी है
कदम जमीं पे मगर
हौसले आसमानी हैं।

कर्नल अमरदीप सिंह, सेना मेडल (से.नि.)
82nd Batch NDA

सैन्य नेतृत्व का पहला सोपान

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA)

वर्दी और देशभक्ति ज़िंदगी से बढ़कर थे...

कर्नल आशुतोष शर्मा की शहादत को शत् शत् नमन

रोहित कृष्ण नंदन

कर्नल आशुतोष शर्मा जैसे व्यक्तित्व विरले होते हैं
जो छोटी सी ज़िंदगी में बड़ा काम कर जाते हैं...
पावक की लपटों में पड़कर सोना कुंदन बन जाता है।
भाव मधुर हो नन्हा धागा रक्षाबंधन बन जाता है।।
संघर्षों की भट्टी में तप जाना कोई खेल नहीं।
त्याग-तपस्या से कोई माथे का चंदन बन जाता है।।

ये पंक्तियां शहीद कर्नल आशुतोष शर्मा की ज़िंदगी पर सटीक बैठती हैं...

हंदवाड़ा मुठभेड़ में 02 मई 2020 को शहीद हुए 21 राष्ट्रीय राइफल्स के कमांडिंग अधिकारी कर्नल आशुतोष शर्मा मूल रूप से बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले थे, वर्तमान समय में शहीद का परिवार पिछले 16 वर्षों से जयपुर (राजस्थान) में रह रहा है। जब हम जयपुर स्थित उनके घर पहुंचे तो वीरांगना पत्नी पल्लवी शर्मा के चहेरे पर उदासी नहीं मुस्कराहट थी जो पति पर गर्व को बयां कर रही थी।

शेष पृष्ठ 16 व 17 पर...

अन्तिम पग से...
अन्तिम पथ...
एक मिसाल
अमर शहीद कर्नल आशुतोष शर्मा

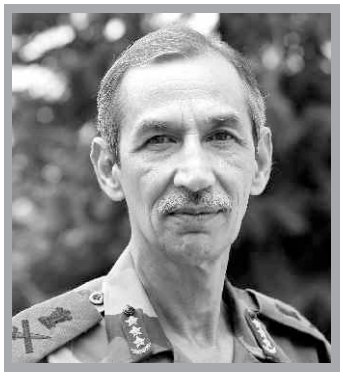

संदेश

भारतीय सेना वीरता और बलिदान दोनों ही शब्दों का मूर्त रूप है। देश की सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए जिस अदम्य कर्तव्यनिष्ठा का परिचय हमारी सेना ने दिया है वह पूरे विश्व में अद्वितीय है। हमारे सैनिक और उनके परिवारों का पूरा राष्ट्र ऋणी है। सेनाएँ सदैव अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर रही हैं और न केवल युद्ध काल बल्कि शांति काल में भी आपदा के समय हमारी सेनाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमारे सैनिक पूरे देश से आते हैं और सेनाएँ राष्ट्रीय एकता का सच्चा प्रतीक हैं। सेनाओं का आधुनिकीकरण बड़े स्तर पर चल रहा है और हम हर परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार हैं।

राष्ट्र निर्माण में सैनिकों और उनके परिवारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अब समय है कि देश अपने सैनिकों के कार्य और उनके बलिदान से अवगत हो। उत्तर पूर्व के घने जंगल हों या सियाचिन की दुर्गम ऊंचाइयाँ या फिर तपता रेगिस्तान और अथाह सागर ही क्यों न हो, सैनिक अपने आदेश के तहत वहाँ डटा है। एक सैनिक का जीवन कैसा होता है, बाहर की दुनिया के लिए इसका अनुमान लगाना भी मुश्किल है। दुनिया के किसी भी अन्य कार्य या नौकरी से इसकी तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि कोई और ऐसा कार्य नहीं है जो आपसे आपका जीवन माँगता है। हर परिस्थिति का सेना डटकर सामना करती है। वर्तमान दौर में महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने से लेकर आधुनिक हथियार और उपकरणों की खरीद तक को लेकर प्रतिदिन कुछ न कुछ समाचारों में रहता है। ऐसे में सेनाओं की सही छवि के निर्माण में हिंदी मीडिया की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र प्रेम से बढ़कर कुछ नहीं है, राष्ट्र की अखंडता व एकता की रक्षा के लिए जान की बाजी लगाने के लिए पल-पल तैयार रहना ही सच्ची राष्ट्रभक्ति है। मेरा अनुरोध है कि देश के नागरिक राष्ट्र प्रेम की अपनी नैतिक जिम्मेदारी का पालन करें और और देश सेवा में सेना के साथ कदम मिलाकर चलें।

मैं माही संदेश मासिक पत्रिका की समस्त टीम को शुभकामनाएँ देता हूँ, हर वर्ष की भांति माही संदेश के सेना विशेषांक ने समाज और सैनिकों के बीच जो कड़ी स्थापित की है, वो वास्तव में सराहनीय कदम है, मुझे उम्मीद है कि यह सेना विशेषांक युवाओं को न केवल सैन्य सेवाओं के लिए प्रेरित करेगा बल्कि उनको सेना के जवानों व अधिकारियों की शौर्य से परिपूर्ण गाथाओं से रूबरू भी कराएगा।

जय हिंद

लेफ्टिनेंट जनरल दीपेंद्र सिंह हुडा (से.नि.)
PVSM, UYSM, AVSM, VSM & Bar, ADC
(पूर्व कमांडर : उत्तरी कमान)

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश , 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरू नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा, जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क :

दो वर्ष : ₹ 800
पंचवर्षीय : ₹ 2,000
आजीवन : ₹ 11,000

चेक MAHI SANDESH (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर प्रति वर्ष 300/- अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।

भवदीय
'रोहित कृष्ण नंदन'

संपादक : माही संदेश
खाता संख्या : 37802854186
IFSC : SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा : कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर
Paytm 9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाओं को माही संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

डाक का पता - संपादक, माही संदेश
50-51 ए, कनक विहार, एसबीआई बैंक के पास, हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर पिन-302021 राजस्थान

ईमेल-
editormahisandesh@gmail.com
Mob. & whatsapp 9887409303

अनुशासन व समय प्रबंधन सिखाती है सेना

सुधीर माथुर
संरक्षक-सलाहकार
माही संदेश
mathursudhmat@yahoo.com

हमारा परिवार भी सैन्य सेवाओं में रहा है। मेरे पिताजी स्व. कैप्टन महाराज बिहारी माथुर थे जिन्होंने अपने जीवन के कई वर्ष भारतीय सेना को दिए, इसके बाद सेना से सेवानिवृत्ति लेने के बाद वो रेलवे पुलिस में भर्ती हुए। जब मैं नौ वर्ष का था तब उनका निधन हो गया लेकिन उनके आदर्श व उनके साथ बिताये लम्हे आज भी मेरे साथ मेरे दिल के करीब हैं। मेरे जीजा जी लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी भी सेना में रहे। मेरे बचपन और जवानी का अधिकांश समय सेना के माहौल में गुजरा है बचपन में पिताजी के साथ कुछ समय रहने का अवसर मिला उनके बाद लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी की पोस्टिंग कसौली, महू, भटिंडा, कश्मीर, शरीफाबाद, अकनूर रही, जहाँ मुझे भी जाने का अवसर मिला। मैंने अनुशासन की पहली सीढ़ी सेना से ही सीखी, यदि आपके जीवन में अनुशासन है तो आपकी हर मंजिल आपके लिए आसान बन जाएगी। दूसरा समय का प्रबंधन ये भी हमें सेना सिखाती है, समय का प्रबंधन ही आपको सबसे अलग बनाता है, इसके बिना हम जीवन को बेहतर नहीं बना सकते हैं। एक पुरानी स्मृति जीवंत हो आई जब लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी ब्रिगेडियर के पद पर थे तब वो उस समय ब्रिगेड हाउस में रहते थे, मेरा कुछ समय के लिए वहाँ जाना हुआ तब मैंने देखा कि दो जवान प्रतिदिन ब्रिगेड हाउस के अंदर सुबह छह बजे तिरंगा फहराते और शाम को सूर्य अस्त होने पर ध्वज उतारते, उस समय ब्रिगेडियर मोहिंदर पुरी झंडे को सलामी देते थे। एक ऐसा दृश्य था जो आपके अन्दर देश प्रेम की भावना को और बढ़ा देता है। गर्व का अनुभव होता है। सच में देश सेवा से बढ़कर कुछ नहीं है। यदि आप सैन्य सेवाओं में नहीं है लेकिन एक अच्छे नागरिक बनकर अपने दायित्व निभाकर हम देश सेवा कर सकते हैं।

सुधीर माथुर

माही संदेश
(राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक	स्व. डॉ. मदन लाल शर्मा* स्व. पद्मनारायन*
संरक्षक-सलाहकार	सुधीर माथुर*
प्रधान संपादक	रोहित कृष्ण नंदन (9887409303)
प्रबंध निदेशक	डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*
प्रबंध संपादक	योगिता 'ज़ीनत'*
सह-संपादक	नित्या शुक्ला* ममता पंडित* डॉ. महेश चन्द*
आईटी सलाहकार	सोनू श्रीवास्तव*
संवाददाता	दीपक कृष्ण नंदन* ईशा चौधरी*
अकादमिक सलाहकार	डॉ. सुधीर सोनी*
बिजनेस हैड	अनुराग सोनी* राजपाल सिंह*
कानूनी सलाहकार	शिव कुमार अवार*
सर्कुलेशन मैनेजर	आर.के.शर्मा* (मुम्बई)

परामर्श समिति

माला रोहित कृष्ण नंदन*	डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर*
डॉ. गीता कौशिक*	राजकुमार शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा*	बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा*	डॉ. मीना शर्मा*
चन्द्र प्रकाश गुप्ता*	प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक सदस्य	रामेश्वरी देवी*
डिजाइनिंग	Design n Print (www.designnprint.in)
मुद्रण	कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :
50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।
ई-मेल :
editormahisandesh@gmail.com
मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।
नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

देशभक्ति की मिसाल बनें हम

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

सबसे पहले देश की सेना को सलाम। भारतीय सेना ने समय-समय पर अपने शौर्य का प्रदर्शन कर देश का गौरव बढ़ाया है। जीवन बनाने की जो कला सेना के पास है वह और कहीं नहीं है। एक व्यक्ति जब सेना की वर्दी पहनता है तो देश के प्रति कर्तव्य निष्ठा से भरा जीवन सभी के लिए प्रेरणा बन जाता है। ऐसा नहीं है कि सिर्फ वर्दी पहनकर ही हम देशभक्ति दिखा सकते हैं। हम आम नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों का भली प्रकार से पालन करें तो वह भी देशभक्ति है। हम जब अपने बारे में सोचने की बजाय देश के बारे में सोचें तो यकीनन स्थितियां पहले से बेहतर हो जाएंगी। हम अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर न टालकर खुद निभाएं हो सकता परिस्थितियाँ विकट हों, असफलताओं से सामना हो लेकिन एक बात हमेशा याद रखें कि रास्ते जितने मुश्किल भरे होंगे मंजिल उतनी ही खूबसूरत होगी। अभी दुनिया कोरोना संकट से जूझ रही है। हम भी इस संकट से दो-दो हाथ कर रहे हैं। उम्मीद है हम यह कोरोना की जंग जल्द ही जीतेंगे। जिस तरह हर मुश्किल घड़ी में सेना हर पल देश के लिए तैयार खड़ी रहती है, हमें भी खड़ा होना पड़ेगा, याद रहे, एक सैनिक अकेले नहीं जूझता है कठिनाइयों से, उसका पूरा परिवार ऐसी पीड़ा से गुजरता है। जब कोई शहीद हो जाए तो किस पीड़ा से गुजरता है परिवार, पर सैनिक हमेशा से ही देश को बाकी सब संबंधों से ऊपर रखता है। हमें यह बात नकारनी पड़ेगी कि 'हम सब चाहते हैं भगत सिंह तो हो लेकिन पड़ौसी के घर में हो'। इसकी शुरुआत हमें स्वयं से करनी होगी। हम जितना हो सके अपने सीमित संसाधनों से सेना की तरह निःस्वार्थ भाव से सेवा करें यकीनन देश में अच्छाई का प्रसार हो जाएगा। माही संदेश के इस सेना विशेषांक द्वारा हम अपनी सेनाओं का आभार व्यक्त करना चाहते हैं, इसमें सैनिकों के जीवन से जुड़ी अनमोल बातें हैं, सैनिक क्या चाहते हैं? उनके परिवार वाले क्या सोचते हैं? इन्हें जानने के लिए सैनिकों से अच्छा माध्यम भला क्या हो सकता है... देश के वीरों को माही संदेश का सलाम... आदरणीय कवि जयशंकर प्रसाद की कविता की यह पक्तियां हमें प्रेरित करती हैं....

जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारत वर्ष

शेष फिर

एक नज़र यहां भी

सलाम
वर्दी और देशभक्ति ज़िंदगी से बढ़कर थे कर्नल आशुतोष शर्मा की शहादत को शत् शत् नमन रोहित कृष्ण नंदन 2

जन संदेश
अनुशासन व समय प्रबंधन सिखाती है सेना सुधीर माथुर 4

देश का गौरव
राष्ट्रीय रक्षा अकादमी कर्नल अमरदीप सिंह 7

मानवता
ऑगस्टीन क्रिस्कू का फौजी घर कर्नल अमरदीप सिंह 9

कथा संदेश
वॉर एंड पीस डॉ कविता माथुर 10

युवा मन
देश सेवा में आगे आएं युवा विश्व चैंपियन गोविंद सिंह 12

मन की बात
मेरी पहली लॉन्ग ड्राइव नित्या शुक्ला 13

प्रेरणा
देश में देशभक्ति रहनी चाहिए - जितेन्द्र सिंह गुर्जर रोहित कृष्ण नंदन 14

कर्तव्य
यादों के साथ मजबूत होते इरादे ममता पंडित 18

कॅरियर संदेश
ले.ज.मोहिंदर पुरी 20

हमारा कानून
भारतीय सेना में कोर्ट मार्शल डॉ. मुकेश अग्रवाल 23

आर्म्ड फोर्सेस ट्रिब्यूनल सशस्त्र बल न्यायाधिकरण शिवकुमार 'अवार' फौजदार 24

किताबो की दुनिया
नीरज गोस्वामी की कलम से 26

मन का कोना
एक सैनिक-प्रेतात्मा की चिट्ठी राजेन्द्र मोहन भटनागर 27

सिनेमा संदेश
मांझी नैया ढूंढे किनारा : यूनुस परवेज शिशिर कृष्ण शर्मा 28

व्यक्तित्व
भारतीय वायु सेना से मिली हौसलों को उड़ान रोहित कृष्ण नंदन 30

आवरण चित्र

ग्रुप कैप्टेन **अभिजीत टोकेकर***, वायुसेना मेडल

संप्रति : राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में कार्यरत

शौक : फोटोग्राफी (इंटरनेट पर : FOTOKY)

जब मैं तो तेरे अंदर हूँ

तू मुझको बाहर ढूंढे है
जब मैं तो तेरे अंदर हूँ
इतना न कर गंभीर मुझे
मैं जीवन मस्त कलंदर हूँ

साँसों में लिखा है मैंने
इन साँसों से ही पढ़ना तू
जीवन के रस्ते जैसे हों
बस आगे आगे बढ़ना तू

हार गया गर बाज़ी तू जो
मलता ही हाथ रह जाएगा
बीता पल बीता अवसर
न वापस लौट के आएगा

ज्यादा सोच में पड़ना क्या
सोच लिया तो डरना क्या
मैं ही धरती मैं ही आकाश
मैं ही अनंत समंदर हूँ

तू मुझको बाहर ढूंढे है
जब मैं तो तेरे अंदर हूँ

मेरा दिल

कल बरसों बाद फिर पहुँची उसी जगह पर..
ढूंढने अपने दिल को, जो छूट गया था कहीं..
वो घर, वो आंगन, वो कमरा
और उसकी दहलीज़ पर खड़ा कोई...
इस बात से बेखबर के
उसके कदमों में पड़ा है
किसी का दिल...
वो उसका एक मुस्कान के
साथ चले जाना
वहाँ से...
इस बात से बेखबर कि
किसी का दिल पड़ा है,
वहीं पर, उसी दहलीज़ पर..
इस इंतज़ार में कि शायद
उस शख़्स की नज़र
पड़े इस पर और वो इसे उठा ले.....
आज बरसों बाद, उस आंगन में आना हुआ..
सब तरफ सन्नाटा, सिर्फ हवा की सांय सांय..
और कुछ सिसकियां.....
लेकिन किसकी सिसकियां ....?
ये सिसकियां उसी की हैं, जो आज भी उसी
दहलीज़ पर पड़ा है....
बरसों बाद भी, किसी के इंतज़ार में...
हां ये ही तो है, जिसे मैं ढूंढ रही थी....
मेरा दिल.....!!!!!

नीलम हुंदल (सैन्य पत्नी)
गणित शिक्षिका
आर्मी पब्लिक स्कूल जालंधर
E-mail: hundalneelam@gmail.com

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी

कर्नल अमरदीप सिंह, सेना मेडल (से.नि.)
82nd Batch NDA

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, भारतीय सशस्त्र सेना की एक संयुक्त सेवा अकादमी है, जहाँ तीनों सेवाओं, थलसेना, नौसेना और वायु सेना के कैडेटों को एक साथ प्रशिक्षित किया जाता है। यह महाराष्ट्र में पुणे के करीब खडकवासला में स्थित है।

जब से अकादमी की स्थापना हुई है तब से एनडीए के पूर्व छात्रों ने बड़े-बड़े युद्धों का नेतृत्व किया है। यहाँ के पूर्व छात्रों को परमवीर चक्र और अशोक चक्र जैसे सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

इतिहास

1941 में, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पूर्वी अफ्रीकी अभियान में सुडान की मुक्ति के लिए भारतीय सैनिकों ने बलिदान दिया था। इसके फलस्वरूप भारत के तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड लिनलिथगो ने सुडान सरकार से सौ हजार पाउंड का उपहार प्राप्त किया। युद्ध के अंत में भारतीय थलसेना के तत्कालीन कमांडर-इन-चीफ फिल्ड मार्शल क्लाउड ऑचिनलेक की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ, समिति ने दुनिया भर के विभिन्न मिलिटरी अकादमी का अध्ययन-निरीक्षण किया और दिसंबर 1946 में भारतीय सरकार को इसकी रिपोर्ट प्रस्तुत की। समिति ने वेस्ट-प्वाइंट की अमरीकी अकादमी के प्रशिक्षण के आधार पर, संयुक्त मिलिटरी अकादमी सेवा की स्थापनी की सिफारिश की।

अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, ऑचिनलेक की रिपोर्ट को लागू कर दिया गया। समिति ने 1947 के उत्तरार्ध में स्थायी रक्षा अकादमी आरंभ करने के लिए कार्य योजना की शुरूआत की और अकादमी को बनाने के लिए जगह की खोज शुरू की। साथ ही उन्होंने एक अंतरिम प्रशिक्षण अकादमी की स्थापना करने का निर्णय लिया, जिसे ज्वाइंट सर्विसेज विंग (जेएसडब्ल्यू) के नाम से जाना गया और 1

जनवरी 1949 को देहरादून में आर्म्ड फोर्सेस अकादमी (वर्तमान में इंडियन मिलिटरी अकादमी के नाम से जाना जाता है) के रूप में इसकी शुरूआत की गई। प्रारंभ में, जेएसडब्ल्यू में प्रशिक्षण के दो वर्षों के बाद, आर्मी कैडेट को ए.एफ.ए के मिलिटरी विंग में दो वर्ष के अतिरिक्त प्रशिक्षण के लिए भेजा गया, जबकि नौसेना और वायु सेना कैडेट को अतिरिक्त प्रशिक्षण देने के लिए यूनाइटेड किंगडम के डार्टमाउथ और क्रानवेल में भेजा गया।

भारत के विभाजन के बाद, सूडान से प्राप्त मौद्रिक उपहार में भारत का हिस्सा 70,000 था। (शेष 30,000 का उपहार पाकिस्तान के लिए गया था). भारतीय सेना ने एनडीए के निर्माण में इन निधियों का उपयोग करने का फैसला किया। 6 अक्टूबर 1949 को तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा अकादमी की नींव रखी गयी। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी को औपचारिक रूप से 7 दिसम्बर 1954 को आरम्भ किया गया। 16 जनवरी 1955 को एक समारोह इसका उद्घाटन हुआ।

परिसर

एनडीए परिसर पुणे शहर के 17 किमी दक्षिण-पश्चिम में, खडकवासला झील के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह तत्कालीन बंबई राज्य सरकार द्वारा दान की गई 8,022 एकड़ (32.46 कि मी2) के 7,015 एकड़ (28.39 कि मी2) में स्थित है। इसकी स्थापना के लिए झील के किनारे वाला स्थान चुना गया, साथ ही यहाँ पर स्थित पहाड़ी इलाके की उपयुक्तता के लिए भी। यहां लोहेगांव के करीब एक हवाई अड्डे के साथ-साथ स्वास्थ्यप्रद जलवायु है।

पूर्वी अफ्रीकी अभियान के दौरान सूडान थिएटर में भारतीय सैनिकों के बलिदान के सम्मान में एनडीए के प्रशासनिक मुख्यालय का नाम सूडान ब्लॉक रखा गया था। 30 मई 1959 को भारत में सूडान के राजदूत रहमतुल्ला अब्दुल्ला द्वारा इसका उद्घाटन किया गया। जोधपुर के लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह इमारत एक 3 मंजिला बेसाल्ट और ग्रेनाइट की संरचना है। इसके नीचले तल की दीवारों पर एनडीए के उन स्नातकों की तस्वीरें बनी हुई है जिन्हें सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र और अशोक चक्र आदि प्राप्त हुआ है।

युद्ध के कई अवशेष एनडीए परिसर की शोभा बढ़ाते हैं, जिसमें कब्ज़ा किए गए टैंक और विमान शामिल है। व्यास लाइब्रेरी में 100,000 से भी अधिक मुद्रित किताबों का संग्रह उपलब्ध है। इसके अलावा अनेकों इलेक्ट्रॉनिक संग्रह और कम से कम 10 भाषाओं में दुनिया भर के अनेकों पत्रिकाएं और जर्नल उपलब्ध हैं।

प्रवेश

यू.पी.एस.सी द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा के माध्यम से एनडीए के आवेदकों का चयन किया जाता है। इसके बाद आवेदकों को चिकित्सा परीक्षण के साथ, व्यापक साक्षात्कार का सामना करना पड़ता है- जिसमें सामान्य योग्यता, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, टीम कौशल, साथ ही शारीरिक और सामाजिक कौशल परीक्षण शामिल है। यहाँ साल में दो बार प्रवेश मिलता है और सेमेस्टर की शुरूआत जुलाई और जनवरी में होती है। प्रत्येक लिखित परीक्षा में लगभग 300,000 आवेदक परीक्षा देते हैं। आमतौर पर, इनमें से लगभग 10,000 छात्रों को साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया जाता है। प्रत्येक सेमेस्टर में लगभग 300-350 कैडेटों को प्रवेश दिया जाता है। लगभग 50 कैडेटों को वायु सेना, 40 को नौसेना के लिए और शेष कैडेटों को आर्मी के लिए स्वीकार किया जाता है। वे कैडेट जो सफलतापूर्वक यहाँ के तीन साल के पाठ्यक्रम को पूरा करते हैं, उन्हें और एक साल की सेवा-प्रशिक्षण के बाद, संबंधित सेवा में अधिकारियों के रूप में कमीशन किया जाता है

पाठ्यक्रम

शैक्षणिक कार्यक्रम

एनडीए एक पूर्णकालिक, आवासीय स्नातक कार्यक्रम प्रदान करता है। कैडेट अपने तीन वर्ष के अध्ययन के बाद बेचलर की डिग्री (बेचलर ऑफ आर्ट्स, बेचलर ऑफ साइंस, बेचलर ऑफ कंप्यूटर साइंस या बेचलर ऑफ टेक्नालजी) प्राप्त करता है। साइंस स्ट्रीम में भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित और कम्प्यूटर साइंस आदि विषय शामिल है। मानविकी स्ट्रीम में इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, भूगोल और विभिन्न भाषा के विषय भी शामिल है। बेचलर ऑफ टेक्नालजी में भाषाओं के साथ साथ तकनीकी विषयों को शामिल किया गया है।

तीनों धाराओं में अकादमिक पाठ्यक्रम को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

- पाठ्यक्रम के अनिवार्य कोर्स में कैडेट अंग्रेजी, विदेशी भाषा (अरबी, चीनी, फ्रेंच या रूसी), हिन्दी, भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, कंप्यूटर विज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और भूगोल का अध्ययन करते हैं।
- फाउंडेशन कोर्स अनिवार्य है जिसमें सैन्य अध्ययन और सामान्य अध्ययन शामिल होते हैं। सैन्य इतिहास, सैन्य भूगोल, हथियार प्रणाली और युद्ध सामाग्री आदि जैसे विषय सेना अध्ययन में कवर किए जाते हैं। भू राजनीति, मानव अधिकार, विज्ञान पर्यावरण जैसे विषय सामान्य अध्ययन में शामिल किए जाते हैं।
- यहाँ कैडेट क्रस स्ट्रीम का भी अध्ययन करते हैं।

तीन साल के प्रशिक्षण के बाद वैकल्पिक पाठ्यक्रम के अनुसार उन्हें अन्य सेवा अकादमियों में स्थानांतरित किया जाता है।

शारीरिक-प्रशिक्षण

सभी कैडेट जो सफलतापूर्वक इस कार्यक्रम को पूरा करते हैं उन्हें सशस्त्र बलों में अधिकारियों के रूप में कमीशन किया जाता है। इसलिए, सैन्य नेतृत्व और प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा है।

अकादमिक के अलावा, कैडेटों के लिए सम्पूर्ण छह सेमेस्टर के दौरान कठोर शारीरिक प्रशिक्षण अनिवार्य है। लघु शस्त्र प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, कैडेटों को हाबी क्लब के लिए विकल्पों का भी चुनाव करना होता है जिसमें पैरा ग्लाइडिंग, नौकायन, जलयात्रा, तलवारबाजी, घुड़सवारी, मार्शल आर्ट, शूटिंग, स्कीइंग, आकाश डाइविंग, रॉक क्लाइम्बिंग, आदि शामिल हैं।

उल्लेखनीय पूर्व-छात्र

अकादमी की स्थापना के बाद से अकादमी के कई पूर्व छात्रों ने सभी प्रमुख युद्धों में नेतृत्व किया है और उसमें हिस्सा लिया है। उन्होंने कई वीरता पुरस्कार जीतने का एक शानदार रिकार्ड कायम किया है और सशस्त्र बलों में सर्वोच्च पद हासिल करने का गौरव प्राप्त किया है।

अकादमी के तीन पूर्व छात्रों को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

- कप्तान गुरबचन सिंह सलारिया, मरणोपरांत, 1 गोरखा राइफल्स, कांगो, 1961
- सेकेण्ड लेफ्टिनेंट अरूण खेत्रपाल, मरणोपरांत, 17 पूना हार्स, 1971 की भारत-पाकिस्तान युद्ध
- कप्तान मनोज कुमार पांडे, मरणोपरांत, 11 गोरखा राइफल्स, करगिल युद्ध, 1999

अकादमी के नौ पूर्व छात्रों को अशोक चक्र ,31 पूर्व छात्रों को महावीर चक्र ,152 छात्रों को वीर चक्र से सम्मानित किया गया। इसके अलावा 33 पूर्व छात्रों को कीर्ति चक्र 122 पूर्व छात्रों को शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया है। 8 आर्मी स्टाफ के चीफ, 7 नौसेना के चीफ, भारतीय सशस्त्र बलों के 4 वायु सेना के चीफ एनडीए के पूर्व छात्र रहे हैं।

ऑगस्टीन क्रिस्कू का फौजी घर

(संथाल युवक ऑगस्टीन क्रिस्कू और कर्नल जॉली जोसेफ के बीच सिर्फ एक सम्बन्ध था, मानवता का। पढ़िए कैसे एक फौजी एक परिवार का सहारा बना)

कर्नल अमरदीप सिंह
सेना मेडल (सेवानिवृत)
amardeep179@gmail.com

असम, उत्तर पूर्व भारत के सात राज्यों में सबसे बड़ा राज्य है और अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध भी है। असम सैकड़ों विभिन्न जातीय एवं जनजातीय समुदायों का घर है। संथाल, भारत में तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है जो कि भूटान, अरुणाचल प्रदेश की तलहटी के साथ जंगलों में निवास करती है। इसकी ज्यादातर लोग चाय बागानों में मजदूरों के रूप में काम करते हैं। सदियों की स्वदेशी विरासत के साथ, आदिवासी गुणों में निष्ठा रखने वाले संथाल असम में विशिष्ट स्थान रखते हैं। कई दशक के उग्रवाद, हिंसा, गरीबी और बेरोजगारी से प्रभावित दर्दनाक अतीत इस क्षेत्र के लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण रहा है।

भारत-भूटान की सीमा से दूर सुदूर गाँव लिंगुरकट्टा में रहने वाले 30 साल के संथाल आदिवासी ऑगस्टीन क्रिस्कू के लिए जीवन कभी आसान नहीं था। मजदूरी कर के मामूली कमायी से अपने परिवार के पांच लोगों का पेट भरना एक बड़ी समस्या थी। जुलाई 2012 के पहले सप्ताह में एक ऑगस्टीन परिवार पर एक बड़ी विपदा आन पड़ी। भारी मानसून की बारिश के कारण, ब्रह्मपुत्र नदी उफान पर थी, जिससे ऊपरी असम में तबाही मची थी। भारी मात्रा में जल भराव के चलते गांवों में हजारों लोग बेघर हो गए। ऑगस्टीन की बाँस की बनी झोपडी जो पहले ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी, प्रकृति के रोष का सामना करने में असमर्थ साबित हुई। झोपडी के जल समाधि लेते ऑगस्टीन परिवार बेघर हो गया और बाकी लोगों के साथ उन्होंने गाँव के सामुदायिक भवन में आश्रय लिया। पूरा क्षेत्र ही बारिश के रुकने की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था।

बारिश में भीगने और भाग्य की क्रूरता से बेखबर, उनकी बेटी साबित्री आराम के लिए अपनी माँ की डोकोना से लिपट गई। सर से छत उठ जाने का गम गहरा होता है। ऑगस्टीन और

उसकी पत्नी मोनिका के लिए जीवन का सबसे खराब दौर था। सब प्रार्थनाएं बेकार सिद्ध हो रही थीं। बेघर होने की पीड़ा के साथ अपने परिवार को भोजन उपलब्ध कराने में असमर्थता ऑगस्टीन के आदिवासी गौरव के लिए एक गंभीर चुनौती थी। उसने अपने जीवन में कभी इतनी निराशा और हताशास का सामना नहीं किया था।

फादर जेवियर, कैथोलिक चर्च, तामुलपुर के पुजारी थे। बाढ़ से प्रभावित परिवारों के दुख ने उनको भी झकझोर दिया था। उन्होंने इस कठिन समय में ईश्वरीय आदेश के तहत ग्रामवासियों की पीड़ा को कम करने का फैसला किया। ऐसी आपदाओं के समय में, भगवान के पास जरूरतमंदों की मदद करने का एक अनूठा तरीका है। कर्नल जोबी जोसेफ, तामुलपुर गैरिसन में तैनात थे। वे स्थानीय कैथोलिक चर्च से नियमित रूप से जुड़े हुए थे। रविवार की प्रार्थना सभा के बाद वे अक्सर पुजारी के साथ बातचीत करते थे। उस दिन भी वो फ़ादर जेवियर से मिले और मानसून की बाढ़ से प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए इच्छा व्यक्त की।

केरल में कर्नल जोसेफ के अपने घर की निर्माण प्रक्रिया भी जोर शोर से चल रही थी। उन्होंने फ़ादर जेवियर को अपने निर्माणाधीन घर की लागत का 10% दान करने की पेशकश की। फादर ज़ेवियर कर्नल जोसेफ की उदार हृदयता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कर्नल जोसेफ को विश्वास दिलाया कि उनके द्वारा की गयी सहायता राशि का उपयोग केवल बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए किया जायेगा। कर्नल जोसेफ ने फ़ादर जेवियर को दान राशि सौंप दी और इसके तुरंत बाद उनका तबादला तामुलपुर से बाहर हो गया।

कर्नल जोसेफ की दी हुई दान राशि से फादर जेवियर ने ऑगस्टीन को उसी स्थान पर पक्का घर बनाने के लिए धन दिया, जहां कभी उसकी टूटी फूटी बांस की झोपड़ी हुआ करती थी। ऑगस्टीन और मोनिका की आंखों में आंसू थे जब फादर जेवियर ने दंपति को अपने नए घर में जाने के लिए कहा। ऑगस्टीन और मोनिका ने घर में प्रवेश करने से पहले कर्नल जोसेफ की उदारता की सराहना की और निस्वार्थ सेवा के लिए फादर जेवियर को धन्यवाद दिया। आज, दंपति खुशी-खुशी अपनी तीनों बेटियों सबित्री, मरीना और रोज़मैरी के साथ पक्के घर में रहते हैं।

कर्नल जोसेफ ने एक सैनिक के सरल हृदय और अच्छे मानवीय गुणों का परिचय दिया। अपनी निस्वार्थ भावना के कारण एक दुखी परिवार के लिए वे देवतुल्य साबित हुए।

भारतीय सेना यूँ भी सद्भावना परियोजनाओं के माध्यम से जरूरतमंदों की पीड़ा को दूर करने में सबसे आगे रही है। भारतीय सेना के अधिकारियों और जवानों ने व्यक्तिगत रूप से और निस्वार्थ भाव से उग्रवाद प्रभावित आबादी की भलाई के लिए समय समय पर और अमूल्य योगदान दिया। सेना में एक नहीं सैकड़ों कर्नल जोसेफ हैं जिनके लिए देश और समाज अपने व्यक्तिगत हितों से कहीं आगे है।

कर्नल जोसेफ की ये कहानी भारतीय सैनिकों के उच्च आदर्शों और मानवीय संवेदनाओं का आईना है जिसका दुनिया भर में शायद ही कोई और उदाहरण मिलेगा। ऑगस्टीन क्रिस्कू का फौजी घर आतंक और घृणा भरे समाज में प्रेम और सेवा ठंडी हवा के झोंके के समान है।

वॉर एंड पीस

डॉ. कविता माथुर
जयपुर, राजस्थान
kavitamathur229@gmail.com

गूगल सर्च करते हुए सहसा जॉर्ज ऑर्वैल के इस कोट पर रमा की नज़र पड़ी, 'वॉर इज़ पीस...फ्रीडम इज़ स्लेवरी...इग्नोरैंस इज़ स्ट्रैंथ'। 'वॉर इज़ पीस?'..दुबारा पढ़ा.. एक बार फिर से पढ़ा और शुरु हो गई एक बार फिर से रमा के ज़ेहन में गाहे-बगाहे चलने वाली जंग...

आखिर क्या औचित्य है और क्या हासिल है इतिहास में दर्ज इन सारे रणों का ? क्या चाहते थे वो राजे-महाराजे-प्रमुख ? विश्व-विजेता बनना? पर किसके दम पर? युवाओं को घरों से उठाकर उनके हक़ की ज़िंदगी देने के बजाय उन्हें 'सिपाहियों' में तब्दील कर देना ...उन्हें माँओं/माशूकाओं के आग़ोश की जगह जिरह-बख्तर में क़ैद कर देना...प्रकृति-प्रदत्त कर्तव्यों का निर्वाह करने की गरज से वो अपने नीड़ का निर्माण करते और अपने माता-पिता की आँखों, जीवनसाथी के दिलों, संतति की उम्मीदों की तृप्ति बनते... लेकिन इन प्रमुखों के निजी, तर्कहीन, अमानवीय स्वार्थों के चलते उन्हें महीनों अपने परिवार से दूर जंग पर रहना पड़ता ताकि उन लोगों की झूठी शान का परचम लहराता रहे। एक इंसान के भरपूर ज़िंदगी जीने के हक़ का एन्क्रोचमेंट है ये युद्ध!

युद्ध का प्रत्यय वजूद में आया ही क्यों? धरती पर तो सबका बराबर का हक़ था ..सभ्यताएँ अपने प्रारंभिक चरणों में ही जीवनयापन के लिए आदान-प्रदान का तार्किक बार्टर - सिस्टम अस्तित्व में ले ही आई थीं, तो मनुष्य ने अपने लालच को इतना क्यों बढ़ने दिया हम कितने ही तर्क-वितर्क कर लें, पर क्या वॉर को नैतिक रूप से जस्टिफ़ाई किया जा सकता है? उन्होंने तो अपने 'अहं' की तुष्टि के लिए युद्ध लड़ लिये, पर उन शहीद सिपाहियों के नुक़सान, उनके परिजनों को जो कभी न भरने वाले ज़ख़्म दिये गये, उनके बारे में क्या तर्क दिया जायेगा?

जबसे कैप्टन वीर कारगिल में शहीद हुए, रमा के ज़ेहन में सोते-जागते इन्हीं सवालों की जंग चलती रहती।

'मनोरमा, मेरी मनोरमा, तुम्हें पता है मैं तुम्हें 'मनोरमा' क्यों कहता हूँ?'

'नहीं'

'क्योंकि मेरे मन में जो रमी बैठी हो तुम', नशीली निगाहों से देखते हुए वीर उसे बांहों में भर लेते थे।

'ठीक है तो मैं भी अबसे तुम्हें वीर नहीं रणवीर कहा करूँगी'

'वो क्यों?'

'रण' के पक्षों जो खड़े होते हो हमेशा, वो भी चुटकी लेते हुए खुद को छुड़ा कर भागती तो वीर पीछे-पीछे दौड़ते और पूरे घर में दोनों की हँसी गूंजने लगती थी।

कोमल मन के स्वामी वीर की वॉर के बारे में एकदम विपरीत विचारधारा थी। 'इट्स ए नेसेसरी ईविल' कहते हुए 'हॉट-पर्स्यूट ' के डॉक्ट्राइन पर हिमायती रुख़ अख्तियार कर लिया करते थे वीर।

'हॉट-पर्स्यूट'...ये ख़्याल आते ही तमतमा कर पास रखी कांच की साइड-टेबल पर ज़ोर से हाथ पटक दिया था उसने। एक किरच चुभी ..हाथ में .. दिल में .. धार बह निकली .. खून की.. आँसुओं की...

मॉम, मॉम क्या हुआ?, अपनी स्टडी छोड़ कर घबराया हुआ प्रणव सामने हांफता हुआ पूछ रहा था।

'कुछ नहीं बेटू, गलती से हाथ टेबल पर पड़ गया था। ज़रा निओस्पोरिन ले आयेंगे आप?'

माँ को उँगलियों के कोरों से आसूं पोंछते देख भौंचक्का सा प्रणव दौड़ कर फ़र्स्ट-एड-किट ले आया था और बड़े ही सलीक़े से मॉम का हाथ दुरुस्त कर दिया था उसने। हाथ के ज़ख़्म की तो दवा हो गई थी, लेकिन दिल के ज़ख़्म का क्या? उस रात फिर गीले तकिये का खारी स्वाद लेते लेते आँख लग गयी थी रमा की!

शांत नीला आसमान अचानक समंदर बन गया है...समंदर की भूखी मछलियाँ फाइटर-प्लेन बन कर एक-दूसरे का शिकार करने में मशगूल हैं... भयंकर गर्जना...दीवारें और खिड़कियाँ चटक-चटक कर बिखर रही हैं... पहाड़ों पर टिके दुर्ग चरमरा कर ढह रहे हैं.. लाखों कराहों की आवाज़ें एक बड़ी चीख बनकर आकाश की तरफ़ उड़ चली है... धूल का बड़ा सा गुबार उठा और अचानक सब कुछ शांत... नीला आसमां काला हो गया है और उस कालिमा के अंतिम छोर के परे कहीं से उभर कर एक ज्वाला निकली और सीधे उसके गर्भ में समा गई ।

उस दिन दो खबरें मिली थीं उसे ।

'मैम, कैप्टन वीर वॉज़ सक्सेसफुल इन डिस्ट्रॉइंग ऐनिमी-बंकर एंड सून वी विल बी डिक्लेयर्ड विक्टोरियस इन दिस वॉर... '

ये सुनते हुए रमा का चेहरा अपने पति के प्रति दर्प से चमचमाने लगा था, कि उसे आगे ये सुनाई दिया, 'आई डोंट नो हाउ टु ब्रेक दिस न्यूज़ टू यू... आई एम एक्सट्रीमली सॉरी टू इन्फ़ॉर्मेशन यू दैट ही कुडन्ट सर्वाइकल द वून्ड्ज कॉज़्ड बाय अ बुलेट लास्ट नाइट...' फ़ोन के उस पार से आती आवाज़ अब सुन नहीं पा रही थी वो। आस-पास का आवरण शून्य में बदलने लगा था, जैसे ऑक्सीजन का अंतिम मॉलीक्यूल भी छन कर तिरोहित हो चुका हो और अब उसकी सारी सारी चेतनाएँ उस शून्य में समा गई थीं।

जब होश आया तो प्रणव के दुनिया में आने के संकेत ने उसे वॉशरूम जाने को मजबूर कर दिया था ।

कैसे पल थे वो ? पैराडॉक्सिकल.. एक साथ एक ही वक्त पर मिलने वाली ये कैसी खबरें थी दोनों .. लेकिन पूर्णतः विरोधाभासी होने के बावजूद उनका रिएक्शनरी एक ही हुआ था... सैलाब का बहना.. आँखों से ! उसने घडी की ओर देखा... साढ़े बारह बज चुके थे । आज का ही दिन था वो। आज बेटा सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई में लगा है और अपने डैड की तरह इसके बाद आर्मी ज्वाइन करने का सपना देख रहा है। और जबसे उसने ये जाना था कि उसके पिता की शहादत वाला दिन ही मॉम का उसे गर्भ में धारण करने का दिन भी था, तभी उसने निश्चय किया था कि अब वो अपना बर्थडे इसी दिन मनायेगा, न कि असली जन्मदिन को।

रमा ने बेड से उठकर लाइट जलाई और स्टडी कमरे की ओर गई तो बेटे को विक्टर की ' ऐसेंशियल्स ऑफ ब्रिज इंजीनियरिंग ' पढ़ते हुए पाया।

सुबह जल्दी से बेटू का फ़ेवरिट चीज़-केक बेक करके वही चंद सवाल सीने में दबाए रमा घर में अपने पसंदीदा स्पॉट पर खड़ी हुई थी ।बाल्कनी , जिसे उसके इकलौते बेटे प्रणव ने अपनी मॉम के लिए सुंदर सा कोज़ी-कॉर्नर बनाने की ज़िम्मेदारी उठा ली थी । ज़ेहन में ख़्यालों की जंग जारी थी।

'मॉम,मॉम.. सुनिये, कब से आवाज़ दे रहा हूँ' कहते हुए प्रणव ने झकझोर कर अपनी तरफ़ मोड़ा तो मॉम के आब-ए-चश्म से उसके लख्तेजिगर के हाथ सराबोर हो गये।

'ओ' मॉम, फिर से आपकी दिमाग़ी वॉर शुरू हो गई, उफ़्फ़'

अपनी माँ को अच्छी तरह समझता था प्रणव.. और क्यों न समझेगा ? उसके लिए अपनी पीएचडी, नौकरी, शानदार कैरियर गॉव पर लगाकर होम ट्यूशन करना मंजूर किया था मॉम ने..

'जब तक कोई मजबूरी न हो, अपने नैसर्गिक कर्तव्यों से पलायन कर, उनकी तिलांजलि दे कर कैरियर की ऊँचाईयाँ तय करने को'ढोंग' मानती हूँ निरा ढोंग, कोई अचीवमेंट नहीं..वो त्याग नहीं अपने अहम् का तुष्टिकरण है , और कुछ नहीं ... कैसे पलने देती अपने दिल के टुकड़े को पराये हाथों ?'

बहुत गर्व था प्रणव को अपनी काबिल माँ पर ..

'आई एम सो प्राउड ऑव यू मॉम, चलिये लेट्स वॉच योर फ़ेवरेट शो 'स्पेशल ऑप' !

'तो देखो ना बेटू... अलग-अलग क्षेत्रों के बड़े विशेषज्ञ भी वॉर को जायज़ मानते हैं.. आख़िर क्यों? और तुम्हारे डैड तक फ़ेवर में होते थे, कहते हुए उसके दिल में एक टीस उठ रही थी।

'मैं बताता हूँ क्यों मॉम?'

मॉम के सवालों को तरह-तरह के तर्कों और तथ्यों से से समझाने की कोशिश में खुद को खपा दिया करता था बेटा।

'ज़रा सोचिए मॉम, किसी देश का प्रमुख एक ख़ास धार्मिक विचारों को मानता है.. और एक उग्रवादी संगठन भी उसी धर्म का अनुयायी है.. प्रमुख उस संगठन से मिलकर पड़ोसी देशों में हमले कराना शुरू करदें, तो किसी तीसरी ताक़त को हस्तक्षेप करना ही पड़ेगा .. तो वॉर होगी कि नहीं?'

बेटे का तर्क जायज़ था।

आपको याद है आपने मुझे ऑटोबान-हाईवेज़ के बारे में बताया था.. क्या है वो?'

'हॉ याद है, वर्ल्ड के फास्टेस्ट हाइवें है और सिर्फ़ एक ही देश में है जबकि पूरी दुनिया को उसकी ज़रूरत है।'

'हॉं.. मानती हैं न् आप? और उस देश के दूरदर्शी तानाशाह ने ये तब बनी दी थीं जब इतनी स्पीड की तो क्या, तब इतनी कारें ही नहीं हुआ करती थीं।.. वो पूरे कॉनटिनेंट को एक कर देना चाहता था .. सोचिये, अगर कामयाब हो गया होता तो सिर्फ़ उसी कॉन्टिनेंट में नहीं, बल्कि सारे विश्व में ऑटोबान-हाईवेज़ उपलब्ध होते और रोड-एक्सीडेंट्स में कितनी कमी आ गई होती...भूमि की सम्पदाओं को , रिसोर्सेज़ को एक्वायर करना भी एक उद्देश्य होता है वॉर का..और अंततः देशों के मध्य ट्रेड्स के रास्ते खुलते हैं जिसका फ़ायदा सारे विश्व को होता है.. होता है कि नहीं मॉम?'

रमा निःशब्द थी। प्रणव ने माँ के चेहरे को हाथों में लेकर आँखों में आँखें डालकर आँखों से ही सवाल दागा। रमा की आँखों में 'हाँ' देखकर बोला,' चलिये अब आप टीवी लगाइये, मैं केक और डिनर सर्व करता हूँ। आज मेरा बर्थडे बहुत बहुत स्पेशल रहेगा मॉम !'

'हॉं हॉं बेटू , बहुत स्पेशल !'

रमा की आँखों के अब्र फिर से बरसने लगे थे, मगर दिमाग़ी वॉर से नहीं .... अब वहाँ शांति थी.. सुकून था.. 'पीस' थी !

माही संदेश
मासिक पत्रिका में
विज्ञापन देने के लिए
संपर्क करें
मो. 9887409303
9828673031
9024650482

देश सेवा में आगे आएं युवा

विश्व चैंपियन गोविंद सिंह Gd Constable BSF

युवा पीढ़ी भी आजकल सामाजिक सरोकारों में बढ़-चढ़कर भाग ले रही है और समाज की भलाई के साथ-साथ अपना सामाजिक क्षेत्र में भी कैरियर बना रही है आज हम आपको ऐसे ही शख्सियत के बारे में बताएंगे जो कद में छोटे हैं लेकिन कार्यों से बहुत सुलझे इंसान हैं जिन्होंने राजस्थान ही नहीं अपितु भारत का नाम विश्व पटल पर रोशन किया है इसके साथ ही उन्होंने कोरोना काल में भी मानवता की मिसाल पेश की ऐसे ही सामाजिक क्षेत्र में रुचि रखने वाले गोविंद सिंह जो काफी समय से सामाजिक कार्य कर रहे हैं साथ ही खेल के मैदान में भारत का नाम विश्व पटल पर रोशन कर रहे हैं।

परिचय

गोविंद सिंह भरतपुर के गांव तालफरा के ओंकार सिंह के पुत्र हैं! गोविंद सिंह Gd Constable BSF टकेनपुर (मध्यप्रदेश) हैं! सिंह ने इस महामारी के दौरान ₹21000 नगद तथा 3 माह का आधा वेतन स्वयंसेवी संस्थाओं को दान करने के साथ-साथ खुद भी एक कोरोना योद्धा की तरह कार्य किया है सिंह ने प्रवासी मजदूरों के लिए अल्पाहार तथा जरूरी सामान उपलब्ध कराए हैं।

कोरोना वॉरियर्स

सिंह के कोरोना वॉरियर्स बनने के पीछे एक दिलचस्प कहानी है सिहं लॉक डाउन से पहले अपनी ट्रेनिंग से वापस घर आए तो परेशान करने के लिए किसी ने उनके कोरोना संक्रमित होने की गलत अफवाह गांव में फैला दी जिससे पूरे गांव सहित क्षेत्र में दहशत का माहौल व्याप्त हो गया तब उन्होंने एक जिम्मेदार नागरिक की तरह चिकित्सा अधिकारी को सभी गतिविधियों से अवगत कराया तथा कोरोना टेस्ट के लिए आरबीएम अस्पताल में भर्ती हुए तो अस्पताल में प्रवासी मजदूरों की स्थिति को देखते हुए उन्होंने उनकी मदद करने की सूची तथा अफवाहों से लोगों को बचाने के लिए एक मुहिम छेड़ दी इससे पहले भी सिंह ने कुल 10 बार स्वैच्छिक रक्तदान भी किया है एवं समय-समय पर गरीब तथा जरूरतमंद लोगों की यथासंभव मदद करते रहते हैं।

सरकार से गुहार

गोविंद सिंह ने कोरोना काल में सरकार के शराब के ठेके खोलने से नाराजगी जताई है सिंह ने कहा है कि यकीनन यह देश के लिए बहुत ही कठिन समय है शराब बिक्री से देश की आर्थिक स्थिति में फायदा मिलेगा लेकिन इससे कोरोना संक्रमण फैलने का खतरा भी अधिक रहेगा सरकार को सेहत खराब करने वाली चीजों के बजाय शरीर को स्वस्थ रखने वाली चीजों को वरीयता देनी चाहिए जैसे जिम स्पोर्ट्स क्लब तथा स्टेडियमों को सशर्त खोलने की मंजूरी दे देनी चाहिए जिससे कि लोगों के रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि हो तथा लोग अधिक से अधिक स्वस्थ रहें!

खेल जीवन

गोविंद सिंह एक अंतरराष्ट्रीय भारत्तोलक है जिन्होंने विगत दिनों विश्व पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में रजत पदक जीतकर भारत का नाम विश्व पटल पर सम्मानित किया तथा इससे पूर्व कुल 9 बार अंतरराष्ट्रीय स्तर की वेटलिफ्टिंग तथा पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व कर पदक जीत चुके हैं साथ ही नेपाल तथा थाईलैंड में आयोजित हुई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्ट्रांग मैन ऑफ द चैंपियनशिप का खिताब भी जीता है।

उपलब्धियाँ

1. रजत पदक विश्व चैंपियनशिप यूरोप 2019
2. स्वर्ण पदक अंतरराष्ट्रीय पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप 2019 नेपाल
3. स्वर्ण पदक अंतरराष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग तथा वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप थाईलैंड 2018
4. राष्ट्रीय स्वर्ण पदक तथा स्ट्रांग मैन ऑफ द चैंपियनशिप 2017 नेपाल

विभिन्न सम्मानों से सम्मानित गोविंद सिंह ने अपनी कामयाबी व इस मानवता भरे कार्य की प्रेरणा पिता ओंकार सिंह तथा मित्र गुरमीत सिंह एवं शुभेंद्र

गौतम से मिली गोविंद के पिता श्री ओंकार सिंह जी का कहना है कि जब गोविंद अस्पताल से वापस आया तो प्रवासी मजदूरों की दयनीय स्थिति को देखकर स्वयंसेवी संस्था में धनराशि दान देने की बात कही तथा उनकी मदद की बात कही! गोविंद की रूचि को देखते हुए भी उन्होंने भी उसकी मदद में सहयोग किया वह खुद भी सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लिया ओंकार सिंह ने बताया कि इस उम्र में उसकी सामाजिक कार्य की ललक को देखकर उन्हें अद्भुत खुशी होती है जब उन्हें एक मानवता का नया रूप देखने को मिलता है वह उसकी हर संभव मदद करेंगे!

वही गोविंद ने कहा कि इस महामारी से बचने के लिए आपको बस एक मंत्र की जरूरत है वह है कि- 'सामने वाले को कोरोना है मानकर चलें' यही कोरोना से बचने का सबसे उत्तम उपाय है।

मेरी पहली लॉन्ग ड्राइव

फौजी जीवन और लॉन्ग ड्राइव का चोली दामन का साथ है और शायद हम सभी इस बात को ज़रूर मानेंगे कि हमारे पति की पहले प्यार वाली सूची में हमारा नाम काफी पीछे आता है इस सूची में पहले है देश फिर ऑफिस उसके बाद उनकी गाडी (बुलेट /कार) और फिर आता है हमारा यानी पत्नियों का नंबर, वैसे तो कई यात्राएं की हैं अपने फौजी हमसफ़र के साथ पर जैसे हर पहली बात ख़ास होती है वैसे ही मेरी पहली लॉन्ग ड्राइव भी अनूठी ही थी।

मेरी पहली लॉन्ग ड्राइव याद करूं तो .....कुछ 14 साल पहले की बात है .....

हमने अपनी लॉन्ग ड्राइव शुरू की थी तिरुअनंतपुरम से लेकर इंदौर तक .....

कुछ 2200 किलोमीटर का सफर था और साथ में था 1 साल का थोड़ा सा शरारती मेरा नन्हा यात्री, मेरा बेटा .....

यह उस जमाने की बात है जब Google Maps नहीं हुआ करते थे और शुक्ला जी (पतिदेव) मुझे हमेशा कहते थे तुम बहुत अच्छी co driver हो

इसी घमंड में हम भी एक हाथ में बच्चा और दूसरे हाथ में रोड एटलस लिए अगले शहर, अगले milestone का नाम बताते जाते थे ..और सफर यूं ही चल रहा था ....

सोचिए कितना रोमांचक रहा होगा वह सफर google maps और GPS के बिना ....

रेडियो पर बजते गाने, पीछे वाली सीट पर आधी गृहस्थी, हमसफ़र का साथ और गोदी में नन्हा यात्री यूं समझिये की मेरी पूरी दुनिया ही उस कार में सफर कर रही थी।

परिवार और सामान के अलावा हमारा एक साथी था हमारे साथ और वो था एक छोटा सा कुकर हमारे नन्हे यात्री का खाना बनाने के लिए .....

जहां हम रुकते थे चाय ब्रेक के लिए

उसी चाय की टपरी पर बोल देते थे कि 'भैया बच्चे की खिचड़ी बना दीजिए.....'

सामान हम दे देते थे और जब तक हम चाय पीते थे कुकर में दो whistle आ जाती थी .....

इस तरह गरमा गरम चाय के प्याले और खिचड़ी के साथ 10 दिन का सफर तय किया जा रहा था.....

सफर का सबसे यादगार पहलू बताऊँ तो वो था .....जब एक दिन बच्चे और रोड एटलस के बीच juggling करते-करते हमने अगला पड़ाव अगला शहर गलत बता दिया....

हमें पहुंचना किसी और शहर था और हम पहुंच किसी और शहर गए थे ....

रात के 10:00 बज चुके थे उस छोटे से शहर में सारी होटल बंद होने की कगार पर थी .....

कुछ अजीब सी लाल पीली बत्तियों वाली होटलें खुली थी.....

जिस में कदम रखने के लिए हमारा संस्कारी मन साथ नहीं दे रहा था और छोटे से बच्चे के साथ रात का सफर करना भी ठीक नहीं था.....

फौजी और दर का दूर दूर तक कोई नाता नहीं है सो शुक्ला जी ने सफर जारी रखने का निर्णय लिया।

किसी तरह हनुमान चालीसा पढ़ते -पढ़ते सुनसान हाईवे को पार कर, हम रात के 11:30 बजे एक बड़े से शहर में पहुंचे वहां जाकर पता चला कि अब हम सही रास्ते पर हैं ..

तब जाकर जान में जान आई .... एक दूसरे को मन ही मन गुस्सा तो बहुत किया था हम दोनों हमसफर थे तो सफर खुशनुमा बनाने के लिए मुस्कान और धैर्य का लेबल चिपका रखा था .....

फिर रात्रि विश्राम कर अगले दिन सारी गलतियां भुला कर हमारी लॉन्ग ड्राइव सावधानी और ढेर सारे प्यार के साथ के साथ फिर शुरू हुई .....मैं, मेरा नन्हा यात्री, रोड एटलस, चाय के प्याले, कुकर और गरमा गरम खिचड़ी

ज़िंदगी भी ऐसी ही होती है शायद
आज की गलती को भुला
कल नया सफर शुरु करना ही जीवन है

नित्या शुक्ला
w/o Lt. Col.
Anand Shukla
(JAIPUR)

सैनिक

जब सीमा पर युद्ध चल रहा होता है
तो एक और युद्ध चल रहा होता है
सीमा से बहुत दूर
किसी सैनिक के घर मे
उसकी माँ के मन में
उसकी पत्नी और बच्चों के मन में
उसके पिता और भाई के मन में

कर्तव्य और भावनाओं का युद्ध
सीमा पर कर्तव्य जीतता है

और घर में??
घर में भी कर्तव्य ही विजयी होता है।

कभी कभी सोचती हूँ एक सिपाही
सीमा पर बनता है?
नहीं ,वो घर में ही बनता है।
देशभक्ति उसे घुट्टी में मिलती है।
जो उसके रक्त में बहती है।
तभी तो माँ अपने आँसू
पिता अपना सहारा
और पत्नी अपनी हिचकियां
छिपा लेती है
यहाँ तक कि बच्चे.....
बच्चे भी अपनी भोली तमन्नाएं
छिपा लेते हैं।

एक सिपाही सीमा पर शहीद होता है।
दूसरा उसके घर में बन रहा होता है।

तभी मेरा देश सर उठा कर जी रहा है।
क्योंकि किसी न किसी सैनिक परिवार
में देशभक्त पैदा हो रहे हैं।

काश हर बच्चे की परवरिश ऐसी हो जाए??

विजयलक्ष्मी जांगिड़
जयपुर, राजस्थान
editormahisandesh@gmail.com

देश में देशभक्ति रहनी चाहिए - जितेन्द्र सिंह गुर्जर

रोहित कृष्ण नंदन

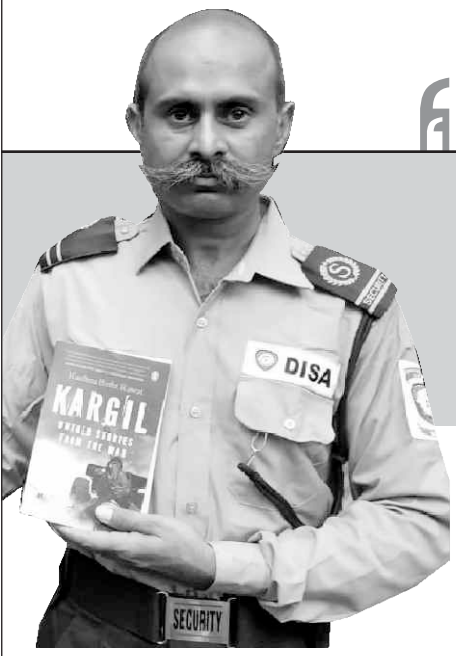

इस भागदौड़ भरी जिंदगी में जहाँ कई बार हम अपनों से भी बात नहीं कर पाते, उनका हाल-चाल नहीं जान पाते...वहीं एक शख्स ऐसा भी है जो शहीद के परिवारों को कारगिल युद्ध से न केवल पत्र लिख रहा है बल्कि प्रतिदिन उनसे मोबाइल पर बातें भी करता है। यह तब से पत्र लिख रहे हैं जब पोस्टकार्ड पन्द्रह पैसे का आता था, जी हां हम बात कर रहे हैं, मूल रूप से भरतपुर (राजस्थान) निवासी चौकीदार जितेन्द्र सिंह की जो अब सूरत (गुजरात) में सिक्यूरिटी गार्ड की नौकरी कर रहे हैं।

तनख्वाह महज दस हजार रुपए महीने लेकिन काम ये ऐसा कर रहे हैं जो लाखों रुपए महीने कमाने वाले भी नहीं कर पाते हैं। समाज के लिए कुछ करने को दिल चाहिए और जज्बा, हालांकि इनके पास पैसा नहीं है लेकिन कभी भी अपने देश प्रेम के आड़े पैसा नहीं आने दिया, एक वक्त का खाना भले ही कम खा लिया हो लेकिन शहीद परिवार को पत्र न लिखें ऐसा कोई भी दिन नहीं आया, जितेन्द्र सिंह अब तक 5500 से अधिक पत्र लिख चुके हैं। बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार ने न केवल मंच पर इनका सम्मान किया बल्कि इनकी तारीफ भी की। सेना के अधिकारी भी इन्हें सम्मान के साथ बुलाते हैं। बजाज बाइक कंपनी ने इन्हें न केवल कुछ शहीद परिवारों से

मिलाया बल्कि इन्हें बजाज कंपनी की विक्रांत बाइक भी उपहार स्वरूप प्रदान की।

जितेन्द्र सिंह के शब्दों में...

जितेन्द्र सिंह कहते हैं कि जब कारगिल युद्ध आरंभ हुआ तभी से मैं शहीद परिवारों को पत्र लिख रहा हूं, कारगिल युद्ध के दौरान सैनिकों ने अपने परिजनों को पत्र लिखे थे और जब तक वे पत्र उनके घर तक पहुंचे तब तक वे युद्ध में शहीद हो चुके थे, तब मैं शहीद के परिजनों को पत्र लिखने को प्रेरित हुआ। मैंने एक बार उस पिता से बात की जिन्होंने कारगिल युद्ध में अपना बेटा खोया था, तब उन पिता ने मुझसे कहा था कि ऐसा लग रहा है कि मैं अपने बेटे से बात कर रहा हूं।

मुझे लगता है कि जिन्होंने हमारे लिए अपने जीवन को त्याग दिया, ऐसे कई लोग हैं जो अपनों को खोने के बाद से दुःखों के साये में जी रहे हैं, हमें उन परिवारों के प्रति अपने नैतिक कर्तव्यों को जरूर पूरा करना चाहिए। पास में धन का अभाव था इसलिए रेल की पटरियों पर पड़े अखबारों को उठाता जिनमें शहीद परिवार और शहीद के बारे में खबरें पढ़ने को मिलतीं, वहीं से ही मैं शहीद परिवार से संपर्क करने की कोशिश करता, इस तरह शहीद परिवारों से जुड़ने लगा। इन्हीं रेल की पटरियों पर एक दिन मुझे जयपुर निवासी आर्टिस्ट चन्द्रप्रकाश गुप्ता की खबर पढ़ने को मिली जब मैंने देखा कि यह कलाकार घर-घर जाकर शहीदों का तैल चित्र भेंट करता है तब खुशी हुई कि कुछ लोग अभी भी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। अब तक मैं तकरीबन 125 शहीद परिवारों से व्यक्तिगत रूप से मिला हूं लेकिन अभी भी हजारों ऐसे परिवार हैं जिनसे मैं नहीं मिल पाया, क्योंकि अभी मेरी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं, हां लेकिन मेरा सपना जरूर पूरा होगा इतना यकीन है मुझे। शहीद परिवार से मिलना भगवान से मिलने के बराबर है।

सेना में होना चाहते थे भर्ती

जितेन्द्र सिंह गुर्जर ने बताया कि वह सेना में भर्ती होना चाहते थे, लेकिन उनकी यह इच्छा इसलिए नहीं पूरी हो पाई क्योंकि उनकी लंबाई एक सेंटीमीटर कम थी, सेना में जाने का सपना टूटने पर जितेन्द्र ने सिक्यूरिटी गार्ड की नौकरी कर ली, वह कहते हैं कि इस वर्दी में उन्हें सेना में होने का अहसास मिलता है और मैं अपने आपको फौजी समझता हूँ। अब तक कहीं भी इन्हें सिक्यूरिटी गार्ड की स्थायी नौकरी नहीं मिली इस कारण अब तक ये 17 वर्दी बदल चुके हैं क्योंकि हर सिक्यूरिटी कंपनी की अलग वर्दी होती है।

रखते हैं शहीद की जानकारी

जितेन्द्र सिंह गुर्जर ने एक रजिस्टर बना रखा है, जिसमें हर शहीद के बारे में पते-मोबाइल नंबर की जानकारी दर्ज है। इनके पास वर्ष 1914 प्रथम विश्व युद्ध से अब तक शहीद हुए तकरीबन 41000 जवानों, अधिकारियों के नाम, पते, संपर्क सूत्र आदि हैं। इनके पास अब तक 11 क्विंटल स्टेशनरी इकठ्ठी हो गई है जिनमें शहीदों की तस्वीर व संपूर्ण जानकारी है।

अपने बेटे का नाम शहीद जवान के नाम पर रखा जितेन्द्र सिंह गुर्जर ने अपने बेटे का नाम हरियाणा के करनाल जिले के शहीद जवान हरदीप सिंह के नाम पर रखा है।

घर पर बना रखा है शहीदों का म्यूजियम

जितेन्द्र सिंह ने बताया कि उन्होंने घर में शहीदों की छोटे आकार की 50 मूर्तियाँ भी बना रखी हैं। यह सब काम वह अपनी कमाई में से कुछ पैसा बचाकर करते हैं।

माही संदेश का आग्रह

सरकार या प्राइवेट कंपनी दें इन्हें स्थायी नौकरी

आर्थिक तंगी सबसे बड़ी होती है, लेकिन कभी भी इन्होंने आर्थिक तंगी को अपने जुनून के आड़े नहीं आने दिया, इनकी पत्नी घरों में काम

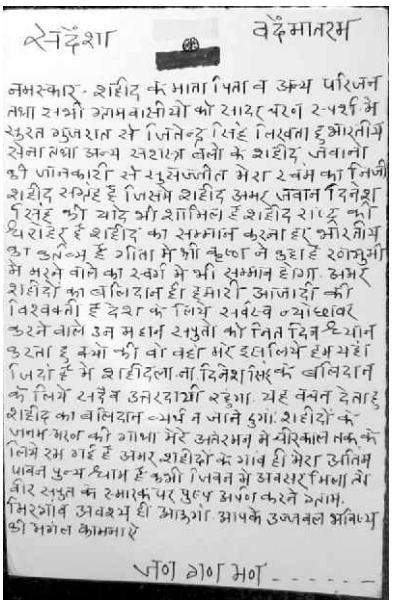

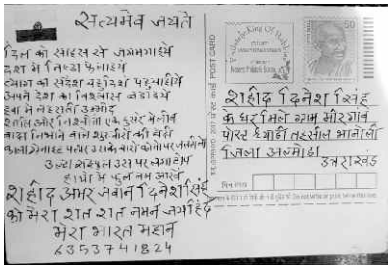

करती हैं, व इन पर इनके बुजुर्ग माता-पिता जो अस्सी वर्ष के आयु के हैं उनकी भी जिम्मेदारी है, एक छोटा भाई भी इनके साथ रहता है। हम आग्रह करते हैं यदि आप समर्थ हैं और आपके पास जितेन्द्र सिंह जी जैसे देश प्रेमी के लिए नौकरी है तो आप इन्हें जरूर आर्थिक संबल प्रदान करें, आप इनसे इनके मोबाइल नंबर 6353741824 या माही संदेश के मोबाइल नंबर 9887409303, 9828673031 पर संपर्क कर सकते हैं।

पेज नं. 2 से लगातार...

वीरता के लिए सेना मेडल से सम्मानित

अपनी यूनिट में टाइगर के नाम से मशहूर शहीद कर्नल आशुतोष शर्मा को दो बार वीरता के लिए सेना मेडल से सम्मानित किया जा चुका है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक वह तकरीबन 30 आतंकवादियों को ढ़ेर कर चुके थे।

संघर्ष के साथ पाई सफलता

कहते हैं कि जब आप शिद्दत से मेहनत करते हैं तो आपको आपकी मंजिल एक न एक दिन जरूर मिलती है, अपने 12 प्रयासों में असफल रहने के बाद 13वें प्रयास में शहीद कर्नल आशुतोष शर्मा भारतीय सेना में अधिकारी के रूप में चयनित हुए। अग्रणी दवाई कंपनी में सेल्स मैनेजर (नॉर्थ इंडिया) के पद पर कार्यरत बड़े भाई पीयूष शर्मा बताते हैं कि साढ़े छह वर्ष की तपस्या थी जो एक लंबे इंतजार के बाद सफल हुई और आशुतोष का सेना में चयन हुआ। मैंने उनका यह संघर्ष करीब से देखा है, जो लगन उनके अंदर थी वह लगन विरले लोगों में ही होती है, वो जिस चीज को पाने की ठान लेते थे जब तक वह उसे हासिल नहीं कर लेते हिम्मत नहीं हारते थे।

वीरांगना पल्लवी शर्मा के शब्दों में...

हमारी पहली मुलाकात 2 जून 2000 को देहरादून में हुई जहां मैं और आशुतोष एसएसबी गाइडेंस लेने आए हुए थे, मैं और आशुतोष दोनों ही एनसीसी कैडेट रहे, सेना में जाने का मेरा भी सपना था लेकिन मेरा यह सपना आशुतोष ने पूरा किया उनके साथ मैंने आर्मी लाइफ को करीब से जीया और जी रही हूँ। पति-पत्नी में से किसी को घर भी संभालना होता है तो मैंने घर की जिम्मेदारी उठाई और आशुतोष ने देश की। मुझे गर्व है आशु ने देश की जिम्मेदारी को निष्ठा से निभाया और देश सेवा में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। आशु की पोस्टिंग गुरुदासपुर, अहमदनगर, वेलिंगटन (ऊंटी), भोपाल, कश्मीर, नागपुर आदि जगहों पर रही। उन्हें अपनी यूनिट से बहुत लगाव था, वह अपनी यूनिफॉर्म खुद धोते थे, उनका कहना था कि ये यूनिफॉर्म मैंने वर्षों की तपस्या के बाद पाई है, इसका ध्यान रखना मेरी जिम्मेदारी है। अपने जवानों की सुरक्षा और उनकी देखभाल में वह जी जान से जुटे रहते थे। कई बार ऐसा भी समय आया जब वह रात के तीन बजे जागकर भी जवानों की सुरक्षा में मुस्तैद रहे। उन्हें पीस स्टेशन पर पोस्टिंग मिल रही थी। 21 आरआर कमांड करने की जिम्मेदारी आशुतोष ने स्वेच्छा से मांगी थी क्योंकि उनका कहना था कि मैं ऐसी जगह काम करना चाहता हूं जहां मैं देश के लिए कुछ बेहतर कर सकूं, वह अक्सर कई ऑपरेशन में हिस्सा लेते थे और खुद सबसे आगे रहकर मोर्चा संभालते थे, उन्होंने अपनी शहादत से वर्दी का फर्ज अदा किया है मुझे उन पर गर्व है।

बिटिया तमन्ना के शब्दों में...

मुझे मेरे पापा का हर सपना पूरा करना है और मैं बड़े होकर आर्मी ऑफिसर बनूंगी, मुझे मेरे पापा पर गर्व है।

बड़े भाई पीयूष शर्मा के शब्दों में...

वो मेरा छोटा भाई तो था ही लेकिन वो मेरा इकलौता दोस्त भी था। आशुतोष सही मायनों में कर्मयोगी था, उसे अपने कर्म पर पूरा भरोसा था वो कहता था कि मेहनत करेंगे तो मंजिल जरूर मिलेगी। इस बात का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि इलाहाबाद बोर्ड एसएसबी इंटरव्यू से रिजेक्ट

होने के बाद अपने अंतिम तेरहवें प्रयास में इसी बोर्ड से सेना में अधिकारी रूप में चयनित होकर अपनी मेहनत को सफल बनाया। वह मेरे से एक क्लास छोटा था, मेरे पास भी एनसीसी रही है मेरा सपना भी सेना में अधिकारी बनने का था जब आशुतोष नवीं कक्षा और मैं दसवीं कक्षा में था तब कुछ ऐसा घटनाक्रम हुआ कि पिताजी स्व. शंभु दत्त शर्मा की नौकरी चली गई, पिता एग्रीकल्चर विभाग में अधिकारी थे, हालांकि बाद में पिताजी ससम्मान नौकरी से सेवानिवृत्त हुए लेकिन वो एक ऐसा दौर था जब संघर्ष भरे दिनों में आपको बनना होता है, इस दौर में हमें खुद को साबित करना था, मैं वर्ष 1993 से प्राइवेट क्षेत्र में नौकरी कर रहा हूं और आशुतोष जी जान से सेना में अधिकारी बनने के लिए जुट गया, साढ़े छह वर्ष का संघर्ष जब आपके नजदीकी रिश्तेदार मिलने वाले सब कहने लगते हैं कि वो क्लर्क बन गया वो डॉक्टर बन गया, वो इंजीनियर बन गया कब तक यूं एग्जाम देते रहोगे लेकिन मेरे भाई की मेहनत एक तपस्या थी वो जब सफल हुई तो सबके लिए एक मिसाल बन गई, भाई की शहादत पर आज न केवल हमें बल्कि देश के हर नागरिक को गर्व है। दोनों भाई मिलकर एक बड़े परिवार की जिम्मेदरियां उठा रहे थे। परिवार में बड़ी बहन व उनके दो बड़े बच्चे भी हैं।

माही संदेश का विशेष आग्रह-

राजस्थान सरकार दे वीरांगना पत्नी को सम्मानजनक नौकरी

जिस तरह से तेलंगाना राज्य सरकार ने कर्नल संतोष बाबू की पत्नी को 5 करोड़ की आर्थिक सहायता, एक प्लॉट एवम् डिप्टी कलेक्टर का पद दिया है राजस्थान सरकार भी वही सहायता देकर शहीदों के लिए मिसाल कायम कर सकती है। वीरांगना पल्लवी शर्मा ने बताया कि उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से नौकरी की सिफारिश मिली है लेकिन उनका पूरा परिवार जयपुर में रह रहा है और अब उन पर बेटी तमन्ना की जिम्मेदारी भी है बेटी को अच्छी तरह से पढ़ाकर शहीद पिता के बाकी बचे सपनों को पूरा करना है। इसलिए जयपुर

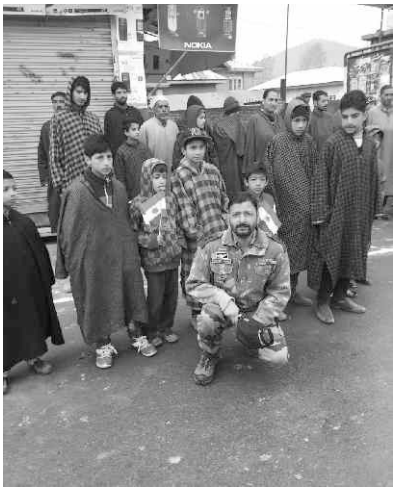

(राजस्थान) में यदि राजस्थान सरकार उन्हें सम्मानजनक नौकरी दे तो उन्हें काफी मदद मिलेगी। वीरांगना पल्लवी शर्मा एम.कॉम (पोस्ट ग्रेजुएशन), बी.एड., नर्सरी टीचर ट्रेनिंग कोर्स, व एनसीसी सी सर्टिफिकेट के साथ माउंटेनियर भी हैं।

जन्मदिवस के अवसर पर परिवार ने किया पौधारोपण

हाल ही 03 जुलाई को शहीद कर्नल आशुतोष शर्मा के जन्मदिवस पर जयपुर के साथ-साथ देश-विदेश में उनकी स्मृति में पौधारोपण किया गया। जयपुर स्थित निवास पर मां सुधा शर्मा, पत्नी पल्लवी शर्मा, बेटी तमन्ना बड़े भाई पीयूष शर्मा, भाभी रचना शर्मा भतीजे अक्षत, सिद्धांत भारद्वाज सहित परिवार जनों ने पौधारोपण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

यादों के साथ मजबूत होते इरादे - मेघना गिरीश

ममता पंडित
सह-संपादक
माही संदेश
pandit.mamta@gmail.com

आप उनकी देह को कैद कर सकते हैं,
मगर आत्मा को नहीं
क्योंकि उनकी आत्मा आने वाले कल में विचरती है
जहाँ तक आप नहीं पहुँच सकते, सपने में भी नहीं.

खलील जिब्रान की संतान के बारे में लिखी हुई इन पंक्तियों को श्रीमती मेघना गिरीश और गहराई से समझ पाई अपने बेटे मेजर अक्षय गिरीश की शहादत के बाद। मेजर अक्षय गिरीश 29 नवंबर 2016 को नागरौटा में हुए आतंकी हमले में शहीद हुए थे।

मेजर अक्षय का सफर

मेघना जी बताती हैं कि मेजर अक्षय पर सेना की वर्दी के लिए एक जुनून सा सवार था। उनके पिता विंग कमांडर गिरीश कुमार वायुसेना से रिटायर्ड हो एक प्राइवेट कंपनी में कार्यरत थे। वहीं उनके नाना, मेघना जी के पिताजी कर्नल ए के मूर्ती भी 1971 के युद्ध में भाग ले चुके थे। बचपन से जो माहौल उन्हें मिला उसका मेजर अक्षय पर गहरा असर हुआ।

मेघना जी बताती हैं कि व अक्षय बहुत ही मेधावी थे और आसानी से किसी और क्षेत्र में जाकर काफी पैसा और नाम कमा सकते थे, लेकिन बहुत छोटी उम्र से उन्होंने देश सेवा का यह सपना सजा लिया था। कुछ मुश्किलों के चलते वे जब वायुसेना में शामिल नहीं हो पाए तो पिताजी ने उन्हें कहा भी की वे फ्लाइंग का कोर्स कर किसी प्राइवेट कंपनी में पायलट के रूप में कार्य कर सकते हैं। लेकिन मेजर अक्षय ने हर प्रलोभन को ठुकराते हुए इंजेनीयर्स (51 इंजीनियर्स) अफसर के रूप में भारतीय सेना की वर्दी को चुना और उन्हें अपने इस फैसले का कभी अफसोस नहीं हुआ। वो हमेशा अपनी मां से कहते थे जो खुशी और आत्मसंतोष मुझे ये कार्य करते हुए मिलता है वो कहीं और नहीं मिल सकता।

नागालैंड, मणिपुर और कश्मीर जैसे सभी संवेदनशील जगहों पर उनकी पोस्टिंग रही। एक तकनीकी अफ़सर होते हुए भी सेना की पेट्रोलिंग व अन्य गतिविधियों में स्वेच्छा से भाग लेते थे, अपने सैन्य साथियों के साथ उन्होंने कई बार खतरनाक इलाकों में गश्त की थी व इस अनुभव से बहुत कुछ सीखा था। उनकी इस खूबी, जुनून और जज़्बे का ही परिणाम था कि 29 नवंबर 2016 को नागरौटा में हुए आंतकवादी हमले का सामना करने गई QRT (क्विक रिएक्शन टीम) का नेतृत्व करने के लिए उन्हें चुना गया। पुलिस वर्दी में आये आतंकियों कुछ महिलाओं और परिवारों को बंधक बनाने की कोशिश में थे। इसी वजह से फौज बहुत ही संयमित तरीके से हथियारों का इस्तेमाल कर रही थी। महिलाओं और बच्चों को बचाने मेजर अक्षय अपने एक और साथी मेजर कुणाल के साथ उस इमारत की बढ़े जहां आंतकी छुपे हुए थे। उनका मकसद और मदद पहुंचने तक दुश्मन को उलझाए रखना था। ताकि बच्चों व महिलाओं को कोई नुकसान न पहुँचे। वो अपने इस उद्देश्य में कामयाब भी हुए। कुछ ही घंटों में

सेना ने सभी आतंकियों को मार गिराया और सभी महिलाओं व बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया लेकिन मेजर अक्षय गिरीश ने इस मिशन के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। गोलियों की बौछार के बाद आतंकियों ने जो ग्रेनेड हमला किया उसमें वे घायल हो गए और कोई तत्काल मदद न पहुंचने के कारण उन्हें बचाया नहीं जा सका।

उनकी पत्नी संगीता, बेटी नैना जो तब मात्र तीन साल की थी घटना के वक्त नागरौटा में ही थे। उनके लिए यह घटना बहुत बड़ा सदमा थी। पत्नी, बेटी और माता-पिता के अलावा मेजर अक्षय अपनी जुड़वा बहन नेहा को भी अकेला छोड़ अंतिम सफ़र पर चल दिये।

पूरे देश में इस घटना के बाद शोक की लहर थी। सभी समाचार पत्रों व एवं न्यूज़ चैनल ने मेजर अक्षय व उनके साथियों के इस बलिदान को प्रमुखता से कवर किया था।

पूरे देश से परिवार को शोक संदेश प्राप्त हो रहे थे

जो उन्हें ये एहसास दिला रहे थे कि दुःख की इस घड़ी में वो अकेले नहीं हैं।

फिर भी अपने घर के इस चिराग के बुझ जाने के बाद फैले अंधेरे का सामना माता-पिता को अकेले करना था और साथ ही मेजर अक्षय की पत्नी और बेटी को भी इस सदमे से बाहर निकलना था।

मेजर अक्षय गिरिश मेमोरियल ट्रस्ट (MGAMT)

किसी भी व्यक्ति के जीवन के सभी सपने माता-पिता बनते ही बच्चों से जुड़ जाते हैं। वो उनकी परवरिश के साथ साथ ही उनके आने वाले कल को गढ़ने लगते हैं अपने ख्यालों में और साथ ही एक छोटी सी आशा रहती है दिल के किसी कोने में कि आज हम जिसे चलना सिखा रहे हैं कल वो हमारा सहारा बनेंगे। पूरे जीवन की पूंजी होती है बच्चे उनका यूं चले जाना जैसे सबकुछ फिर से शून्य हो जाना।

श्रीमती मेघना बताती हैं कि उन्हें पूरे दो साल लगे इस सदमे से बाहर आकर सबकुछ शून्य से फिर से शुरू करने में। मेजर गिरीश की यादों के सहारे उन्होंने उनके अधूरे सपनों करने का सफर शुरू किया मेजर अक्षय गिरीश मेमोरियल ट्रस्ट (MGAMT) की स्थापना के साथ। उनका कहना है कि मेजर अक्षय अपने अपने परिवार, सभी दोस्तों, जवानों और सेना से जुड़े हुए सभी लोगों का खास ख्याल रखते थे। जब भी कोई उनसे मदद मांगता तो उसकी सहायता करने के लिए जी जान लगा देते थे। खासकर अपने जवानों और उनके परिवार का वे खास ख्याल रखते थे। उनके बच्चों को उज्जवल भविष्य के लिए हमेशा मार्गदर्शन करते थे। उनके इसी कार्य को मेजर गिरीश के माता-पिता इस मेमोरियल ट्रस्ट के जरिये आगे बढ़ा रहे हैं।

जुलाई 2018 में ट्रस्ट ने स्कूली छात्रों के बीच देशभक्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्यों के अनुरूप गतिविधियों और कार्यशाला से अपने इस सफ़र कि शुरुवात की। मात्र दो सालों में ही ट्रस्ट ने कई

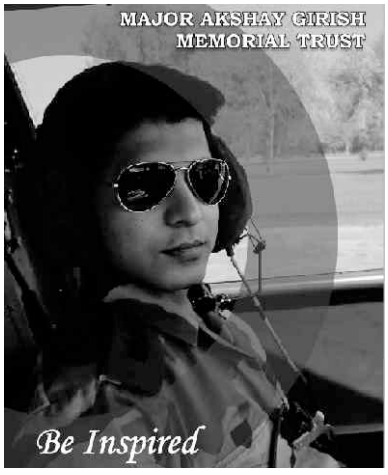

शहीदों के परिवारों से मुलाकात कर उनके जीवन में नई आशा का संचार किया है।

ट्रस्ट के प्रमुख कार्य

- छात्रों के लिए छात्रवृत्ति कार्यक्रम।
- देशभक्ति से ओत-प्रोत सेवाओं (सैन्य / अर्धसैनिक) में देशभक्ति और प्रचार के लिए छात्रों के साथ कार्यशालाएँ।
- शहीदों के परिवारों के साथ एकजुटता दिखाते हुए बहादुर सैनिकों के परिवारों से मुलाकात, जिन्होंने राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।
- शहीदों के परिवारों का दौरा करने के साथ MAGMT उनकी स्वास्थ्य जरूरतों, चिकित्सा उपचार, शिक्षा संबंधी सहायता, पेंशन में व्यवधान, घर की मरम्मत और बेटियों की शादी के लिए व विधवाओं से जुड़े योगदानों में सक्रिय है।

वार्षिक आयोजन-विजय दिवस जैसे महत्वपूर्ण दिवसों के अवसर पर ट्रस्ट विशेष कार्यक्रम आयोजित कर पूर्व सैनिकों व शहीदों के परिवारों का सम्मान करता है।

मेजर अक्षय गिरीश के अदम्य साहस और जनकल्याण की विरासत से प्रेरित यह ट्रस्ट आने वाले समय में कर्नाटक से बाहर भी अपने

सामाजिक कार्यों के विस्तार के लिए प्रयासरत है। आप भी इस ट्रस्ट से जुड़ कर इस महत्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान दे सकते हैं।

पंजीकृत कार्यालय :

635, जेड गार्डन, चरण -4,
सदाहल्ली पोस्ट, बेंगलुरु -562110।
वेबसाइट:
https://majorakshaytrust.org/
इमेल:
mag.memorialtrust@gmail.com
फेसबुक : Major Akshay Girsh

कारगिल युद्ध में 8वीं माउंटेन डिविजन का नेतृत्व करने वाले लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी (सेवानिवृत्त) अब अपना अधिकांश समय समाज सेवा में सक्रिय रहकर बिता रहे हैं साथ ही अपने सैन्य अनुभव से युवाओं को मार्गदर्शन भी प्रदान कर रहे हैं...

ले.ज.मोहिंदर पुरी
PVSM, UYSM
(पूर्व जीओसी 8th माउंटेन डिवीज़न, कारगिल युद्ध)

युवा किस तरह सेना में जवान और अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दे सकते हैं?

› **ले.ज.मोहिंदर पुरी :** राज्य की जनसंख्या के मुताबिक सेना में भर्तियां निकलती हैं, ताकि हर राज्य का अनुपात सही बना रहे। समय-समय पर राज्य के विभिन्न सेंटर्स पर भर्ती रैली का आयोजन किया जाता है। जिसमें सभी जरूरी डॉक्यूमेंट के साथ युवक शामिल होते हैं। सबसे पहले शारीरिक परीक्षण किया जाता है। जिसमें लंबाई, सीने की चौड़ाई के साथ-साथ तकरीबन दो मील की दौड़ भी होती है, इसके बाद लिखित परीक्षा के साथ मेडिकल टेस्ट भी होता है। इसके बाद उत्तीर्ण युवक को रेजीमेंट के सेंटर में नियुक्ति किया जाता है जहां पर नौ माह का सख्त प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण पूरा होने पर कसम परेड़ का आयोजन किया जाता है जिसमें प्रशिक्षित जवान राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के सामने शपथ लेते हैं कि जो हमें आदेश दिया जाएगा उसकी पालना के साथ देश की रक्षा के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहेंगे। फिर इन जवानों को इनकी यूनिट में तैनाती प्रदान की जाती है जहां सिपाही के पद पर भर्ती जवान समय-समय पर होने वाले प्रमोशन से सेवानिवृत्ति तक सूबेदार मेजर के पद पर पदौन्नति प्राप्त करता है। इस प्रमोशन में तकरीबन 29 वर्ष लग जाते हैं। बीस वर्ष की सेवा पूरी करने के बाद भर्ती जवान पैंशन पाने का हकदार बन जाता है।

अब एक अधिकारी के रूप में सेना में भर्ती होने की प्रक्रिया एनडीए की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर होती है जिसका आयोजन यूपीएससी के द्वारा किया जाता है। जिसमें से 17 से 19 वर्ष के युवाओं को शामिल किया जाता है। देश के विभिन्न सेंटर्स पर इस परीक्षा का आयोजन किया जाता है। परीक्षा में उत्तीर्ण युवकों का सर्विस सलेक्शन बोर्ड के जरिए साक्षात्कार लिया जाता है। यह साक्षात्कार पांच से सात दिन तक लगातार जारी रहता है जिसमें डिटेल इंटरव्यू के साथ साइकोलॉजिकल टेस्ट के जरिए मानसिक ताकत की परीक्षा ली जाती है। समूह वार्ता के साथ-साथ मेडिकल टेस्ट भी होता है, एक सैन्य अधिकारी के रूप में योग्य व्यक्ति का चयन अंतिम रूप से किया जाता है।

एनडीए में तीन सेनाओं जल, थल, नभ के लिए उम्मीदवारों का चयन किया जाता है, इसमें चयनित युवाओं को तीन वर्ष के सख्त प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है जिसमें इनकी ग्रेजुएशन की पढ़ाई भी की जाती है। प्रशिक्षण के बाद इंडियन मिलिट्री एकेडमी देहरादून में इनकी दीक्षांत परेड़ में इन्हें सेना में लेफ्टिनेट के पद पर नियुक्ति दी जाती है। इसके अलावा समय समय पर टेक्निकल एंट्री व मेडिकल सेवाओं के जरिए भी सेना में नियुक्तियां प्रदान की जाती हैं।

इसके अतिरिक्त ओटीएस में शॉर्ट सर्विस कमीशन के जरिए दस वर्ष तक के लिए सेना में नियुक्ति दी जाती है। इसके बाद आगे की नौकरी जारी रखने के लिए समय समय पर मूल्यांकन कर इसे सेवा अवधि को बढ़ाया भी जा सकता है।

टी.ए. टैरिटोरियल आर्मी में किस तरह इच्छुक नागरिक भर्ती हो सकते हैं?

› **ले.ज.मोहिंदर पुरी :** यह उन व्यक्तियों के लिए सेना में अपनी सेवाएं देने का अच्छा विकल्प है जिन्हें सेना की वर्दी लुभाती है और अपने जीवन का कुछ समय सेना के लिए देना चाहते हैं। इसमें व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जवान व अफसर के रूप में नियुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसमें नियुक्त होने की अधिकतम उम्र तकरीबन चालीस वर्ष है। टीए में भर्ती जवान व अधिकारी को वर्ष में दो माह की सेवा देना अनिवार्य होता है जिसके लिए उन्हें वह हर सुविधा प्रदान की जाती है जो रैगूलर आर्मी जवान व अफसर को मिलती है। देश में आपात स्थिति होने पर टीए में भर्ती जवानों व

अधिकारियों की सेवाएं ली जाती हैं। वर्तमान समय अब इसके लिए लिखित परीक्षा का आयोजन किया जाता है।

इसके अलावा विभिन्न प्रसिद्ध व्यक्तियों को सेना में सीधे ही टीए में शामिल किया जाता है, उदाहरण के लिए एमएस धोनी, सचिन तैंदुलकर, सचिन पायलट आदि।

देश के नागरिकों के लिए सेना में कुछ समय के लिए सेवा अनिवार्य रूप से लागू हो इस बारे में आप क्या कहते हैं?

› **ले.ज.मोहिंदर पुरी :** अपने देश की जनसंख्या ज्यादा है और यहां यह संभव भी नहीं हो सकता है हां ऐसा हो सकता है कि हर सरकारी कर्मचारी का दो वर्ष की अवधि के लिए सेना में सेवा देना अनिवार्य रूप से लागू हो जाए इससे एक बड़ा बदलाव आएगा, सेना का प्रशिक्षण हर व्यक्ति की क्षमता को और बढ़ाता है।

माही संदेश के पाठकों के लिए आपका संदेश

› **ले.ज.मोहिंदर पुरी :** बस मेरा यही संदेश है कि हमें अच्छा नागरिक बनना चाहिए, हमें हमारे कर्तव्य याद रहें और हमेशा उन कर्तव्यों का पालन करते रहें, हम अपने देश को आगे बढ़ाने में और सेना का गौरव बरकरार रखने में हमेशा सहायक बनें। कई बार विपरीत परिस्थितयां जीवन में आती हैं तो आप उन्हें सीढ़ी बनाकर चढ़ें, यकीन मानिए आप हर मंजिल को पा जाएंगे, क्योंकि कड़ी मेहनत का कोई विकल्प है ही नहीं। हमेशा सकारात्मक रहें, आपकी सकारात्मकता ही आपको मंजिल तक पहुंचाएगी।

देश का सिपाही

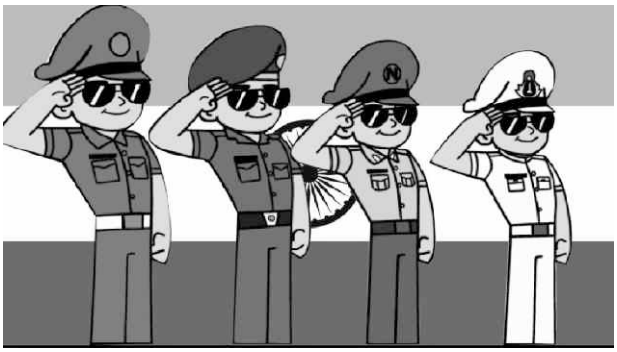

मैं देश का एक सिपाही हूँ ।
बलिदान देश पर हो जाऊँ ।।
इस धरती की गोद में खेला हूँ ।
क़ुर्बान देश पर हो जाऊँ ।।

लाखों वीरों ने प्राण तजे ।
तो यह आज़ादी पायी है ।।
आज इसी पर दुश्मन की ।
नापाक नज़र उठ आयी है ।।

मैं दुश्मन का दिल दहलकर ।
क़ुर्बान देश पर हो जाऊँ ।।
मैं देश का एक सिपाही हूँ ।
बलिदान देश पर हो जाऊँ ।।

देश की ख़ातिर बच्चा बच्चा ।
तूफ़ाँ बन टकरायेगा ।।
इस मिट्टी का ज़र्रा ज़र्रा ।
पर्वत बन भिड़ जाएगा ।।

मैं शत्रु पर शोले बरसाकर ।
क़ुर्बान देश पर हो जाऊँ ।।
मैं देश का एक सिपाही हूँ ।
बलिदान देश पर हो जाऊँ ।।

काश्मीर की वादी अपनी है ।
कर्गिल के पर्वत अपने है ।।
फूलों की मस्त बहारों में ।
बुलबुल के नग़्मे अपने है ।।

मैं स्वर्गभूमि की रक्षा कर।
क़ुर्बान देश पर हो जाऊँ ।।
मैं देश का एक सिपाही हूँ ।
बलिदान देश पर हो जाऊँ ।।

मेरी क़ुर्बानी व्यर्थ न हो ।
सब मज़हब वाले मिल के रहें ।।
सब प्रान्त प्रगति के पथ पर चल ।
भारत की ऊँची शान करें ।।

मैं नभ में तिरंगा फहराकर।
क़ुर्बान देश पर हो जाऊँ ।।
मैं देश का एक सिपाही हूँ ।
बलिदान देश पर हो जाऊँ ।

जय हिन्द !!!

चरनजीत लाल
मेटलर्जिकल इंजीनियर
Columbia, SC (USA)
editormahisandesh@gmail.com

वीर सिपाही तुम्हें नमन है

जान हथेली पर लेकर
तुमने सरहद का मान किया
अपनों,सपनों का संग छोड़
भारत माँ को ही प्रेम किया
इस वीर प्रसूता धरती का
स्वाभिमान कभी झुकने ना दिया
आँख दिखाई हमें किसी ने
तुमने पल में उसे चूर किया
मिट्टी का तिलक लगाकर माथे
समरांगन को चूम लिया
तिरंगे की आन बचाने को
खून अपना तुमने बहा दिया
रख दी गर्दन संगीनों पर
दुश्मन पर जम के वार किया
देश पर मर मिट जाने वाले
देश को सब कुछ मानने वाले
तुम्हीं से ये देश मेरा चमन है
तुम्हीं से इस देश में अमन है
हे भारत के वीर सिपाही
तुम्हें मेरा नमन है

हेमलता शर्मा
जयपुर,राजस्थान
hemajpr26@gmail.com

मैं हूँ एक जवान

मैं हूँ एक जवान
मैं हूँ एक जवान
मैं खुद को नहीं कर सकता बयान
आखिर क्यों हूँ मैं
अपने आप से इतना अनजान?
आओ जानें एक जवान की कहानी
जिसके अंदर न कोई बेईमानी
मरते हैं दूसरों के लिए जीते हैं
अपनों के लिए क्या उनका कोई घर-परिवार नहीं
जो खड़े हैं सरहद पर देश की रक्षा के लिए
छोड़ के अपना घर-परिवार खड़े हैं
दुश्मन के सामने सीना तान
फोन आने पर कितना खुश होते हैं
घर में कर के बात उन्हें
क्या पता मां कितना डर जाती होगी
सुनकर कश्मीर का हाल
अपनी जिम्मेदारियों का
बोझ उठा के चला जा रहा हूँ
अपनों से दूर देखें यह दौड़ कब तक चलती है
क्या बताऊं यारो अब तो
अपने घर जाने के लिए भी
दूसरों से इजाजत लेनी पड़ती है
काश वो बचपन फिर से लौट आए
मां अपने हाथों से फिर खाना खिलाए
फिर से नानी-नाना लौटा दो मुझे मेरा बचपन
फिर से दिला दो।।

.

हवलदार रविंद्र सिंह
मिलिट्री इंटेलिजेंस
एडीजीपीआई

वो पासबां हमारा

सिहरन पैदा कर दे तन में,
वो जज्बा न जाने कहां से लाता है।
खुद को मिटाकर,
औरों की हिफाजत का,
वो जिगर कहां से पाता है।

उपमा सूरज की दूं,
पर नहीं,
रात्रि के तम में ,वह भी तो छुप जाता है।
है ऋषि-मुनि भी गृहत्यागी,
पर,
वह तन को थोड़े मिटाता है।
तम और तन से बेपरवाह, वह सर्वस्व लुटाता है।
बेशक खुदा ने पूरी ताकत से महामानव बनाया,
जो परमार्थ में सरहदों पर, खुद को ही मिटाता है।
खुद को मिटाकर,
औरों की हिफाजत का
वो जिगर कहां से पाता है।

मधुर स्वप्न मन बसाकर,
अभी ही हुई सगाई थी।
किसी के घर में अभी-अभी,
मंगल बजी शहनाई थी।
किसी के आंगन में अभी-अभी,
एक किलकारी गूंजी थी।
कलाई किसी की बहन के लिए,
एक मात्र पूंजी थी।
कोई अपने मां-बाप का,
इकलौता चिराग था।
सबके जीवन संगीत का,
वहीं एक राग था।
वतन की आशिकी में सब रिश्तों को छोड़ा था।
सरहद से अफसोस एक दिन, तिरंगे में लौटा था।
ऐसे वीर सपूतों का केवल, भारत मां से नाता है।
खुद को मिटाकर,
औरों की हिफाजत का,
वो जिगर कहां से पाता है।

उसका यूं लौटना अफसोस था,
पर, एक और अफसोस अजब था।
खुदगर्जों की दुनिया है,
शहीदों का भी मजहब यहाँ।

कुर्बानी का भी श्रेय लेने का, चलन भी गजब यहाँ।
अंधेरों में क्या हुआ,इस पर भी अंधेर यहाँ
इस पर बेमतलब,बेतुके,सवालों की झड़ी यहाँ।
पासबां फिर भी अडिग खडा,मौत सम्मुख खड़ी जहाँ।

हम सलामत रह सके,
इसलिए त्योहार भी कहाँ मनाता है।
खुद को मिटाकर, औरों की हिफाजत का,
वो जिगर कहाँ से पाता है।

भरत कुमार मीणा
वड़ापाल
डुंगरपुर
editormahisandesh@gmail.com

तिरंगा

तड़प- तड़प के दिल से
आह मेरी निकलती है
जब कोई हवा यहां
तेरी छुअन सी लगती है
तेरी हिफाजत को श्वास मेरी
रुक-रुक कर चलती है
मेरे दिल की गाड़ी,
छुक-छुक तेरी ओर गुजरती है।

तीन रंगों में लिपटा
जब तू हँसता है,
पवन संग उड़ता है,
तू आसमानी सा क्या खूब लगता है।
चक्र सी तेरे माथे की बिंदिया
चौबीस है जिसमें तीलियाँ
यह जन्म, वह जन्म,
मेरा हर जन्म,
तुझ पर कुर्बान है।
तू ही तो मेरे
ताबूत की पहचान है।

शिल्पी कुमारी
उदयपुर (राजस्थान)
ईमेल- shilpirsp@gmail.com

भारतीय सेना में कोर्ट मार्शल

डॉ.मुकेश अग्रवाल
Ph.D, LL.M, MBA, MJMC, MA
M : 9309250305

भारतीय सेना अपने गौरवपूर्ण इतिहास को सहेजे हुए है। भारतीय सेना के तीन अंग हैं तथा तीनों सेना का सर्वोच्च सेनापति राष्ट्रपति होता है। भारतीय सेना विश्व की तीसरी सबसे बडी सेना है। जिसने संयुक्त राष्ट्र संघ के शांतिपूर्ण सैन्य अभियानों में अपनी महति भूमिका निभाई है। जनरल विपिन रावत को भारत के पहले और वर्तमान रक्षा प्रमुख या चीफ ऑफ डिफेंस नियुक्त किया। सेना में साहस और अनुशासन महत्वपूर्ण होता है। इसके बिना शक्तिशाली सेना भी असफल हो सकती है। जिस प्रकार से आम जनता के लिए सिविल कोर्ट की व्यवस्था होती है उसी प्रकार से कोर्ट मार्शल आर्मी कर्मचारियों के लिए होती है। इसका काम आर्मी में अनुशासन भंग करने या अन्य अपराध करने वाले सैनिकों पर केस चलाना, उसकी सुनवाई करना और सजा सुनाना होता है। ये ट्राइल मिलिट्री कानून के तहत होता है। भारतीय सेना अभी भी ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाई गई सैन्य न्याय व्यवस्था का पालन कर रही है। भारत में 1857 के विद्रोह (मंगल पांडे) के पहले कोर्ट मार्शल जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी लेकिन इस विद्रोह के पश्चात सेना में अनुशासन स्थापित करने के लिए आर्मी कोर्ट की व्यवस्था की गई और सेना के कमांडेंट को यह अधिकार दिया गया कि वह कानून तोडने वाले व्यक्ति को दण्ड दे।

कोर्ट मार्शल क्या है :-

थल सेना :- थल सेना में किया जाने वाला कोर्ट मार्शल भारतीय थल सेना अधिनियम 1950 के तहत किया जाता है। आर्मी कोर्ट को दुष्कर्म (आई.पी.सी. की धारा 376), हत्या (आई.पी.सी. की धारा 300) तथा गैरइरादतन हत्या (आइ.पी.सी. की धारा 304 ए) के मामलों में कोर्ट मार्शल नहीं किया जाता है। क्योंकि ऐसे मामलों को सिविल पुलिस के सुपुर्द कर दिया जाता है। आर्मी अपने स्तर पर भी अपराध की जांच कर सकती है। लेकिन जम्मू- कश्मीर एवं पूर्वोत्तर में सेना चाहे तो ऐसे मामले अपने हाथ में ले सकती है। इसमें त्वरित कार्यवाही कर आरोपी को सजा देने का प्रावधान है।

वायु सेना:- इसी प्रकार भारतीय वायु सेना वायु सेना अधिनियम,1950 के तहत कोर्ट मार्शल कर सकती है।

नौ सेना :- इसी तरह नौ सेना में भी नौ सेना अधिनियम 1957 के अंतर्गत कोर्ट मार्शल किया जाता है।

कोर्ट मार्शल निम्न अपराधों के लिए किया जा सकता है :

1. जब व्यक्ति सेवा में हो।
2. भारत के बाहर हो।
3. सीमा पर हो।

आर्मी अधिनियम,1959 के अध्याय टप् के सेक्शन 34 से 70 तक अपराधों को वर्णित किया गया है। जिसमें मिथ्या साक्ष्य, भ्रष्टाचार, हमला, दुष्प्रेरण, कारावास से भागना, बिना अवकाश के अनुपस्थित, मिथ्या एनरोलमेंट एवं सीनियर से दुर्व्यवहार प्रमुख हैं।

कोर्ट मार्शल चार प्रकार का होता है :-

1. जनरल कोर्ट मार्शल:- इसमें जवान से लेकर अफसर तक सभी को दण्डित करने का अधिकार होता है। इसमें जज के अलावा 5 से 7 लोगों का पैनल होता है। यह कोर्ट दोषी को सैन्य सेवा से बर्खास्त, आजीवन प्रतिबन्ध, या फांसी की सजा तक दे सकती है। साथ ही इसमें युद्ध के दौरान अपनी पोस्ट छोडकर भागने वाले सैन्य कर्मियों को भी फांसी देने का प्रावधान है।

2. डिस्ट्रिक्ट कोर्ट मार्शल:- यह कोर्ट सिपाही से लेकर जे.सी.ओ. लेबल तक के लिए होती है। इसमें 2 से 3 सदस्य मिलकर सुनवाई करते हैं एवं इसमें अधिकतम दो साल तक की सजा होती है।

3. समरी जनरल कोर्ट मार्शल :- जम्मू कश्मीर जैसे प्रमुख फील्ड क्षेत्र में अपराध करने वाले सैन्य कर्मियों के लिए होती है इसमें बहुत तेजी से निर्णय होता है।

4. समरी कोर्ट मार्शल:- इसमें सबसे निचले स्तर की सैन्य अदालत में केस चलता है। इसमें सिपाही से एन.सी.ओ. तक के पद वाले लोगों का केस सुना जाता है। इसमें दो साल की सजा देने का प्रावधान है।

कोर्ट मार्शल की प्रक्रिया तीन चरणों में पूरी होती है :-

1. जांच अदालत का गठन:- सेना में किसी तरह का अपराध या अनुशासनहीनता होने पर सबसे पहले कोर्ट औफ इन्क्वारी के आदेश जारी होते हैं। जांच में जवान या अफसर पर लगाये गये आरोप सही साबित होने और गम्भीर मामला होने पर जांच अधिकारी तुरन्त ही सजा दे सकता है। इसके अलावा बडे अपराध होने पर केस औफ एवीडेंस को भेज दिया जाता है।

2. गवाही का सारांश :- प्रारंभिक जांच में दोष सिद्ध होने पर सक्षम अधिकारी साक्ष्य जुटाने के लिए जांच करता है। यदि साक्ष्य मिल जाते हैं तो आरोपी को तुरन्त सजा देने का भी प्रावधान है। इस दौरान सभी कानूनी दस्तावेज एकत्रित किये जाते हैं। जांच पीठासीन अधिकारी तुरन्त सजा या कोर्ट मार्शल का आदेश करता है।

3. कोर्ट मार्शल:- कोर्ट मार्शल की प्रक्रिया शुरू होते ही आरोपी सैन्य अफसर या कार्मिक को आरोप की प्रति देकर उसे अपना वकील नियुक्त करने का अधिकार दिया जाता है।

डिस्ट्रिक्ट कोर्ट मार्शल में सुनाई गई सजा को लेकर सेशन कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है। वहीं कोर्ट मार्शल में सुनाए गये फैसले को आर्मड फोर्स ट्रिबुनल (ए.एफ.टी.) में चुनौती दी जा सकती है।

अंत में आर्मड फोर्स ट्रिब्युनल के फैसले को हाई कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है।

कोर्ट मार्शल में कौन 2 सी सजा दी जा सकती है :-

1. आरोपी की नौकरी छीनी जा सकती है साथ ही उसे भविष्य में मिलने वाले सभी तरह के लाभ खत्म किये जा सकते हैं।
2. जुर्म की संगीनता के आधार पर फांसी, उम्र कैद या एक तय समयावधि के लिए दण्ड दिया जा सकता है।
3. प्रमोशन रोका जा सकता है वेतनवृद्धि व पैंशन रोकी जा सकती है। एलाउन्सेज खत्म किये जा सकते हैं और जुर्माना लगाया जा सकता है।
4. रेंक भी कम करके नीचे की रेंक और ग्रेड की जा सकती है।

सेना में अनुशासन का कठोरता से पालन किये जाने से इसका मान सम्मान बना रहता है।

आर्म्ड फोर्स ट्रिब्यूनल सशस्त्र बल न्यायाधिकरण

शिवकुमार 'अवार' फौजदार
कॉर्पोरेट कंसलटेंट
कॉर्पोरेट लॉयर
एडवोकेट, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर
मो. 8290123456

संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित सशस्त्र बल न्यायाधिकरण विधेयक को 20 दिसम्बर 2007 को राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त हुई। देश का पहला सशस्त्र बल न्यायाधिकरण 8 अगस्त 2009 को लॉन्च हुआ। सशस्त्र बल न्यायाधिकरण अधिनियम, 2007 (2007 का अधिनियम संख्या 55) 15 जून 2008 एसआरओ (ई) दिनाँक 13 जून 2008 से प्रभावी हुआ। यह सेना अधिनियम 1950, नौसेना अधिनियम 1957 और वायु सेना अधिनियम 1950 के अधीन व्यक्तियों के सम्बन्ध में विवादों और आयोग, नियुक्तियों, नामांकन और सेवा शर्तों के सशस्त्र बलों न्यायाधिकरण, परीक्षण के लिए निर्णय प्रदान करता है और उक्त अधिनियमों के तहत आयोजित अदालतों, मार्शल के आदेशों, निष्कर्षों या वाक्यों से उत्पन्न होने वाली अपीलों के लिए प्रदान करने के लिए और उपचारात्मक या आकस्मिक उपचार के मामलों के लिए कार्य करता है।

अधिनियम के तहत ट्रिब्यूनलों को मूल और साथ ही अपीलीय क्षेत्राधिकार दिया गया है। अपने मूल अधिकार क्षेत्र में, ट्रिब्यूनल को सेवा मामलों से सम्बंधित शिकायतें सुनने और तय करने का अधिकार दिया गया है जैसे कि पारिश्रमिक, सेवानिवृत्ति लाभ, कार्यकाल, नियुक्ति, वरिष्ठता, पदोन्नति और सेवानिवृत्ति से सम्बंधित सुनवाई के अधिकार प्राप्त हैं। सशस्त्र बलों के न्यायाधिकरण की स्थापना से पहले, रक्षाकर्मियों के पास ऐसे मामलों में राहत पाने के लिए अपने अधिकार क्षेत्र के तहत उच्च न्यायालयों या सर्वोच्च न्यायालय के पास जाने का विकल्प नही था। सशस्त्र बलों के न्यायाधिकरणों के गठन के साथ, अब उन्हें अपनी शिकायतों के त्वरित निवारण के लिए एक विशेष मंच तक पहुँच प्राप्त होगी। ट्रिब्यूनल के गठन के साथ ही लम्बित मामलों को भी सम्बंधित न्यायालयों से ट्रिब्यूनल की पीठों को हस्तान्तरित कर दी गई थी एवं निरन्तर सुनवाई व निर्णय पारित किये जाते हैं।

Armed Forces Tribunal
Regional Bench Jaipur

सेना, नौसेना और वायु सेना अधिनियमों के प्रावधानों में 'कोर्ट मार्शल' के फैसले के विरूद्ध अपील करने का प्रावधान नहीं था। आपराधिक मामलों में स्थगन की पहली और आखिरी अदालत सशस्त्र बल न्यायाधिकरण है। सेवाकर्मियों के लिए कोर्ट मार्शल के फैसले के खिलाफ एकमात्र संवैधानिक न्यायिक अधिकार प्राप्त है। लेकिन साधारण अपीलीय अदालतों के खिलाफ रिट कोर्ट के पास न्यायिक समीक्षा की एक सीमित शक्ति है क्योंकि सबूतों की सराहना नहीं कर सकते हैं या कोर्ट मार्शल द्वारा दी गई सजा पर निर्णय दे सकती है।

जिस दिन से भारत का संविधान लागू हुआ था उसी दिन से सशस्त्र सेना न्यायाधिकरण की अवधारणा अस्तित्व में थी। इस प्रकार सशस्त्र बलों की शिकायतों के निवारण कि लिए कोई मंच उपलब्ध नहीं था, सिवाय संविधान के अनुच्छेद 32 या 226 के तहत एक याचिका सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में दायर करनी पडती थी। 1992 में पहली बार सर्वोच्च न्यायालय द्वारा महसूस किया गया था कि एक मामले में लेफ्टिनेन्ट कर्नल पृथ्वीपाल सिंह बेदी बनाम् भारत संघ व अन्य में सशस्त्र बलों के जवानों व अपना सुनवाई का पक्ष रखने के लिए कानून द्वारा एक उचित विकल्प मंच प्रदान किया जाना चाहिए। संसदीय प्राक्कलन समिति ने अपनी 19 वीं रिपोर्ट में सेवाशील के लिए एक स्वतंत्र अपीलीय बोर्ड या न्यायाधिकरण की स्थापना का सुझाव दिया था। सन् 2000 में यूनियन ऑफ इण्डिया बनाम् सीएस गिल के मामले में अधिनियम बनाने में समय लगा। सन् 2007 में सशस्त्र बल न्यायाधिकरणों की स्थापना की गई। मामले के उपरोक्त पहलू के अलावा, यह भी ध्यान में रखा गया कि कई सशस्त्र बल के जवान दूर दराज के क्षेत्रों में काम करते हैं और एक तरह से न्याय वितरण प्रणाली उनके लिए दुर्गम है। यहाँ तक कि उनके पास अन्य रोजगार के संसाधन हैं, तो भी यह न्यायिक प्रणाली से उन्हे जोडने में सहायक होगी। इसलिए, यह एक विशेष मंच बनाने के लिए आवश्यक है, जिसमें उनके हितों का हिसाब लगाया जाएगा। जबकि एक ही समय में सशस्त्र बलों की प्रतिष्ठा को बरकरार बनाए रखा जा सकेगा।

सशस्त्र बल न्यायाधिकरण में निम्नलिखित कानून व नियम व प्रॉसीजर हैं

द आर्म्ड फोर्सस ट्रिब्यूनल एक्ट 2007

- द आर्म्ड फोर्सस ट्रिब्यूनल (प्रक्रिया) नियम, 2008
- द आर्म्ड फोर्सस ट्रिब्यूनल (प्रक्टिस) नियम 2009
- द आर्म्ड फोर्सस ट्रिब्यूनल (प्रक्रिया) संशोधन नियम 2011

अपने अपीलीय कार्यों में, ट्रिब्यूनल को कोर्ट मार्शल की कार्यवाही में दिए गए निर्णयों के खिलाफ अपील करने का अधिकार दिया गया है। इसे किसी भी दण्ड को कम करने के अधिकार के साथ साथ बढाने की भी शक्ति प्राप्त है। सबसे महत्वपूर्ण बात, ट्रिब्यूनल में सैन्य हिरासत में रखे गए लोगों को जमानत देने की शक्ति होगी। इसके अलावा, अधिकरण रिकॉर्ड की अदालत के रूप में कार्य करेगा और अवमानना के लिए दण्डित करने की शक्ति रखेगा। यह जालसाजी, काम में गडबडी और गलत बयानबाजी जैसे अपराधों के मामले में आपराधिक अदालत के समान शक्तियों का प्रयोग करेगा। सेवानिवृत्त कार्मिक और उनके आश्रित किसी भी तरह की पेंशन सहित सेवा से सम्बधित मुद्दों के लिए ट्रिब्यूनल का रूख कर सकते हैं।

क्षेत्राधिकार -

भारत में कुल 15 न्यायाधिकरण सुस्थापित किये जाएंगे। इनमें से दिल्ली में प्रधान पीठ होगी और दिल्ली में तीन, चण्डीगढ में दो एंव लखनऊ शहर में तीन न्यायालय और अधिकार क्षेत्र होगें। चण्डीगढ न्यायाधिकरण में पंजाब, हरियाणा, जम्मू एण्ड कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश राज्य शामिल हैं। लखनऊ पीठ में क्षेत्राधिकार उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ राज्य शामिल हैं। कलकत्ता पीठ में पश्चिमी बंगाल, उडीसा, झारखण्ड, बिहार और अण्डमान निकोबार राज्य शामिल हैं। गुवाहटी पीठ में असम, मणिपुर, नागालैण्ड, त्रिपुरा, मिजोरम और अरूणाचल प्रदेश राज्य शामिल हैं। मुम्बई पीठ में महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात राज्य शामिल हैं। कोच्चि की पीठ में केरल और कर्नाटक राज्य शामिल हैं। चैन्नई पीठ में तमिलनाडू और आन्ध्र प्रदेश राज्य शामिल हैं। जम्मू व जबलपुर में भी पीठ का गठन किया गया है। जयपुर पीठ का क्षेत्राधिकार सम्पूर्ण राजस्थान राज्य है। जयपुर पीठ के साथ ही जोधपुर में भी सर्किट बेंच की स्थापना कर निरन्तर सुनवाई की जाती है। जयपुर की पीठ ने 22 जून 2009 से सुनवाई प्रारम्भ कर दी।

सुनवाई के मामलों का वर्गीकरण निम्नलिखित है -

थल सेना, वायु सेना, जल सेना के नियमित कर्मचारी, भूतपूर्व सैनिक, विधवा व आश्रित व्यक्तियों से जुडे मुद्दे व परिवाद, कमीशन का नामांकन और सब्सिडी, तदर्थ नियुक्ति या नियमितिकरण, सरकारी क्वाटरों का आवंटन, अवकाश व निकासी, सरकार ने आवास सम्बंधी मामलों को रखा है। परीक्षा और पाठ्यक्रम, पदों का सृजन और उन्मूलन, वेतन और भत्ते, पेंशन लाभ, मुआवजा, कोर्ट मार्शल, सारांश मार्शल, जनरल कोर्ट मार्शल, जिला न्यायालय मार्शल, न्यायिक जाँच, साक्ष्यों के सारांश की रिकॉडिंग, सेवाओं की समाप्ति सहित प्रशासनिक कार्यवाही, अवॉर्ड, निलम्बन, जमानत, गलत कारावास, अनुशासनात्मक और सर्तकता प्रतिबन्ध, पुर्नविचार याचिका, सरकार या सार्वजनिक क्षेत्र में प्रतिनियुक्ति, प्रत्यावर्तन व अवशोषण से संबधित शिकायत, राशन और वर्दी, यात्रा रियायत, चिकित्सा सुविधाएं, भूतपूर्व सैनिकों के लिए विशेष प्रावधान, शारीरिक रूप से विकलांग, हताहत, सेवानिवृत्ति, बर्खास्तगी, छुट्टी, रिहाई और व्यवस्था, जॉच के बाद पूर्व परिपक्व निर्वहन, मेडीकल ग्राउण्ड पर डिस्चार्ज, कदाचार पर छुट्टी, रेड मार्किंग, विस्तार न मिलने के कारण छुट्टी, अनुकम्पा के आधार पर छुट्टी व अन्य डिस्चार्ज की शिकयतें शामिल हैं। सेना में चयन, पदोन्नति, मूल पद का अनुदान इत्यादि, नायब सूबेदार को पदोन्नति, सूबेदार को पदोन्नति, सूबेदार मेजर को पदोन्नति, कमीशन्ड अधिकारियों को पदोन्नति, वायु सेना व नौ सेना को मानद रैंक प्रदान करना, सीनियरिटी, चिकित्सा प्रतिपूर्ति अवकाश का दावा, ज्वाइनिंग टाईम, आश्रितों की नियुक्ति, दक्षता बार पार करना, जन्मतिथि, चरित्र रोल, गोपनीय रिकॉर्ड, सेवा रिकॉर्ड में प्रवेश, वेतन का निर्धारण, यात्रा विनियम, पेंशन, पारिवारिक पेंशन, सेवानिवृत्ति के अन्य लाभ और बचत लाभ पर ब्याज, अग्रिम या ऋण देने से इनकार करना, अनुदान, भत्ते की वसूली, वार्षिक रिपोर्ट, अनिवार्य सेवानिवृत्ति, सेवानिवृत्ति लाभ, पेंशन के अलावा, पेंशन मामले- विकलांगता पेंशन, चोट, रोग, युद्ध की चोट, ब्रॉड बैंडिंग, पारिवारिक पेंशन, सेवा पेंशन इत्यादि। अन्य सुनवाई में समीक्षा आवेदन, बहाली आवेदन, निर्णयों के सुधार के लिए आवेदन, पहले के आदेश के निष्पादन के लिए आवेदन, कोई भी ऐसे मामले जो उपरोक्त श्रेणी के अन्तगर्त नहीं आते हैं।

अहिंसा अच्छी होती है
पर आत्मरक्षा में किया गया
पहला वार
हिंसा नहीं होता
मन को स्वच्छ
तलवार की धार का तेज
धनुष की प्रत्यंचा का तनाव
तीर के विष का प्रभाव
बनाये रखना पार्थ
साधु होना
सिर्फ साधुओं के बीच
भला होता है।

कर्नल अमरदीप सिंह, सेना मेडल (से.नि)

नीरज गोस्वामी की कलम से

नीरज गोस्वामी
जयपुर, राजस्थान
मो. 98602-11911

मिहींपुरवा विकासखंड के अमृतपुर पुरैना गांव निवासी संजय चतुर्वेदी वर्ष 2002 में भारतीय थल सेना में भर्ती हुए। मेजर संजय ने दक्षिण अफ्रीका के कांगो में तैनाती के दौरान भी अपनी वीरता का लोहा मनवाया था, जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के सेनानायक ने भी मेजर संजय को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया था। इन्हें उत्तराखंड कवि सम्मान से भी नवाजा जा चुका है।

आज ग़ज़लों की किताब 'चाँद पर चांदनी नहीं होती' का जिक्र करूँगा, जिसे लिखा है आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी अत्यंत प्रतिभाशाली युवा मेजर संजय चतुर्वेदी ने. हमें गर्व है अपनी सेना पर जिसमें मेजर संजय जैसे संवेदन शील योद्धा हैं.

संजय अत्यंत युवा हैं इसलिए उनकी शायरी में कच्चे दूध की सी खुशबू आती है. उन्होंने अपनी शायरी में बेजोड़ प्रयोग किये हैं, इसलिए उनके अशआर बहुत अलग और ताज़ा लगते हैं. आईये अब अधिक देर ना करते हुए इस किताब के सफ्हे पलटते हैं और रूबरू होते हैं संजय जी की विलक्षण शायरी से और आगाज़ करते हैं उनकी इस किताब के पहले सफ्हे पर शाया हुई पहली ग़ज़ल के अद्भुत रदीफ़ काफियों से -

घर के चौकीदार हुए दादा दादी
सबके पहरे दार हुए दादा दादी
कौन खरीदे नहीं रहे पढने वाले
उर्दू के अखबार हुए दादा दादी
घर में उनका नहीं रहा हिस्सा कोई
कपड़ों वाला तार हुए दादा दादी

आखरी शेर में 'कपड़ों वाला तार' ने तो कहर ही ढा दिया है. आँखें स्थिति सोच कर नम हो जाती हैं.अपने चारों और बिखरी छोटी छोटी चीजों पर ध्यान देने पर ही आप ऐसा शेर कह सकते हैं. मैंने शायरी की बेशुमार किताबें पढ़ी हैं लेकिन किसी व्यक्ति के लिए जिसकी कोई पूछ न हो के लिए 'कपड़ों वाला तार' वाली उपमा नहीं पढ़ी. ऐसे नयी सोच और काफिये आपको इस किताब के आखरी पृष्ठ पर छपी ग़ज़ल में भी पढने को मिलते हैं, मुलाहिजा फरमाइए-

कोयलें, बच्चे, हवाएं और कोल्हू गाँव के
मिलके गायें तो नयी इक सिम्फनी हो जायेगी
चूमने को आ गये बादल पहाड़ी का बदन
देख लेगी धूप तो कुछ अनमनी हो जायेगी
तुम अकेले हम अकेले क्या करेंगे घूम कर
साथ बैठेंगे तो अच्छी कंपनी हो जायेगी

संजय जी की कोई कोई ग़ज़ल हो सकता है उस्तादों की नज़र में गज़ल लेखन की कड़ी कसौटी पर सही न उतरती हों लेकिन मुझे उन्हें पढ़ते और गुनगुनाते हुए बहुत आनंद आया. मैं ग़ज़ल के तकनीकी पक्ष पर कुछ कहने में असमर्थ हूँ क्यूँ के अभी मैं इस क्षेत्र का विद्यार्थी हूँ और उम्मीद है के ता उम्र विद्यार्थी ही रहूँगा मेरी नज़र में आम पाठक के लिए अनिवार्य होता है के शायर के कहे अशआर उसे अपने लगें और सीधे सीधे दिल में उतर जाएँ, संजय जी इस दृष्टि से कामयाब हुए हैं. वो सहजता से अपनी ग़ज़लों में ऐसे सवाल पूछ लेते हैं के पाठक को जवाब देते नहीं बनता और उसे बगलें झांकनी पड़ती हैं. उदाहरण के लिए नीचे दिए प्रश्नवाचक चिन्ह वाले शेर को पढ़िए...

दिल जला फसलें जलीं छप्पर जला
सिर्फ चूल्हा छोड़ सारा घर जला
आग तो हर घर में होती है मियां
क्या कभी उस आग में शौहर जला ?
खून की गर्मी बचाने के लिए
आग स्याही में लगा अक्षर जला

पांच जुलाई सन उन्नीस सौ उन्यासी में जन्मे संजय ने स्नातक परीक्षा पास की और फिर राष्ट्रिय केडेट कोर में पांच वर्षों का प्रशिक्षण के बाद अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी चेन्नई से सैन्य प्रशिक्षण लिया जिसके बाद उनकी नियुक्ति सत्रवीं बटालियन ब्रिगेड आफ दि गार्ड्स में लेफ्टिनेंट के पद पर हुई. सैनिक गतिविधियों में लिप्त रहने के बावजूद उनका संवेदन शील मन उनसे लगातार खूबसूरत अशआर लिखवाता रहा. उनकी रचनाएँ विभिन्न सैनिक, असैनिक और इलेक्ट्रोनिक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं.

सिर्फ बिजली के लिए पानी न रोकिये
सूखते हैं प्यास में झरने पहाड़ पर
आँधियों के शोर में ढूंढें हैं लोरियां
वक्त से लड़ते हुए बच्चे पहाड़ पर
फिर नहाने चल पड़ीं चश्में पे लड़कियां
बादलों ने कर दिए परदे पहाड़ पर

अंतिम शेर के मिसरा-ऐ- सानी में 'बादलों ने कर दिए परदे पहाड़ पर' कह कर बहुत दिलचस्प मंज़र खींच दिया है. ये उनकी पैनी दृष्टि का परिचायक है. पहाड़ पर उमड़े बादलों का इससे खूबसूरत चित्रण भला क्या होगा.ज़िन्दगी का हर रंग उन्होंने अपनी ग़ज़लों में समेटा है और बखूबी समेटा है. इस छोटी सी उम्र में वो बहुत गहरे अनुभव वाली बड़ी बात सहजता से कह जाते हैं.

ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं होती
आँख में गर नमी नहीं होती
कोई तकता है किसी का रस्ता
वर्ना खिड़की खुली नहीं होती
दूर होने का है मज़ा अपना
चाँद पर चांदनी नहीं होती

किताब प्राप्ति के लिए आप शिवना प्रकाशन के पंकज सुबीर जी से 09977 855399 पर संपर्क कर सकते हैं

लोग पढ़ते हैं कसीदे शान में
जाने ऐसा क्या है उस मुस्कान में
कौन है जिसने हवा को मात दी
फूल अब खिलते हैं रेगिस्तान में
मैं खुद को आदमी उस दिन कहा
राम जब मुझको दिखे कुरान में

एक राज़ की बात और बताता चलता हूँ आपको और वो ये के संजय खुद बहुत दिलकश अंदाज़ में अपनी ग़ज़लें गाते हैं. ये एक ऐसा अनुभव है जिसे प्राप्त कर आप शायद ही उसे कभी भूल पायें. संजय जी के गले में माँ सरस्वती का वास है अगर आपको मेरी इस बात पे यकीन नहीं हो तो आप उनसे उनके मोबाइल नं. 08094791434 पर बात कीजिये और ग़ज़ल सुनने की तमन्ना का इज़हार कीजिये मुझे यकीन है के अगर वो व्यस्त ना हुए तो आपकी अभिलाषा को जरूर पूरा करेंगे.

कौन रोया है बोल ऐ कुदरत
आज दरिया में खूब पानी है
हर तरफ सांप घूमते देखे
किसके आँगन में रातरानी है
आप ईमान का करें सौदा
हम करें तो ये बेईमानी है

हर ग़ज़ल प्रेमी के घर इस जाँ बाज़ मेजर की किताब का अलमारी में होना जरूरी है तो फिर देर काहे की? उठाइए फोन और घुमाइए बस...कुछ समय बाद किताब आपके हाथ में होगी. आप मेजर से बात करें, हम ढूंढते हैं आपके लिए एक और किताब...तब तक...अपनी राम राम राम सबको राम राम राम...

एक सैनिक-प्रेतात्मा की चिठ्ठी

मैंने युद्ध का इतिहास खोजा। यह पता किया कि युद्ध कभी रुके नहीं चाहे कोई सा युग रहा हो। स्वयं भगवान भी उसे रोक नहीं पाए। उन्हें भी युद्धरत होना पड़ा। कोई ईश्वर, भगवान, पैगंबर, गॉड, अल्लाह मानव को यह नहीं समझा सका युद्ध भयानक विनाश का कारण है, अमानवीय हैं। उसे बने रहने से जीवन-जगत की सक्रियता, हलचल और कुछ कर पाने का मिथ्या अस्तित्व स्थायी अस्तित्व की जगह ले लेता है और गौरव अभिमान तथा विध्वंस शक्ति से जुड़कर भूमि को वीर भूमि में बदलता है। व्यक्ति को अमर सेनानी बनाता है। शहीद की स्थापना कराता है। देशप्रेम की आसमान छूती लहर उठाता है। आश्चर्य सैनिक दोनों ओर से वीरगति को प्राप्त होते हैं और अपने देश में शहीद होने का स मान उनसे पाते हैं जो युद्ध की विभीषिका के जनक हैं। उनसे ही राष्ट्रप्रेम का मंत्र मिलता है, उनकी दृष्टि में मानव प्रेम धूल चाटने-चटाने की खोज है। अहिंसा की चमक हिंसा से, हिंसा का रौद्र रूप जितना भयावह होगा उतना ही अहिंसा का मंत्र स मान पाएगा। अब क्या हो रहा है, तंत्र के शासक जन को बनाकर मानवता के पुजारी देखते देखते ही महान शक्तिशाली अधिनायक की आतंकी भयावह छवि से भी अधिक भयानक होकर जनतंत्र को उसमें रखने में कामयाब हो गए। जनतंत्र फिर से चूहा बनकर रह गया, बिल्ली का सरेआम साम्राज्य स्थापित हो गया।

जनता के राज्य में ये ही मानव विरोधी ताकतें तांडवी बिगुल बजा उठीं, लीग ऑफ नेशन को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना वालों ने प्रारंभ में ही वीटो पॉवर की शक्ति हथिया कर शांति का ऐसा महान संदेश दिया कि दिशाएं कांपने लगीं और नंगा नाच विनाश शक्ति का आरंभ हो गया। भयानक से भयानक वेपंस बनाने की होड़ होने लगी। उनकी होड़ में अविकसित एवं विकसित होने वाले देशों का इस्तेमाल मंडी बनाने में सक्रिय हो गया। वो न केवल जनता की गाढ़ी कमाई, मजबूर, गरीब अपंग को उठाने वालों ने बहुत तेजी से उनकी अपंगता और मजबूरी को चारों खाने चित्त कर मूक बना दिया।

जिन्हें घुड़सवारी का शौक हजम होने लगे, वे आबादी के बड़े हिस्से पर शौक की ओर बढ़ते हैं और कमजोर को मजबूरी से नोचने लगते हैं। सरेआम हुड़दंगी हो जाते हैं और जनतंत्र को शतरंज की गोटियां समझकर उनका इस्तेमाल करने लगते हैं। आप अभी देख रहे हैं जनता के अरमानों, विश्वास और इज्जात की ये कैसे धज्जियां उड़ा रहे हैं और हर एक चैनल बढ़-चढ़कर उनका प्रचार करने में लगे हैं। सुना है शेर को आदमी का खून मुंह लगा नहीं वैसे ही वह आदमखोर बनकर जंगल का महासम्राट बन गया है। ऐसे लोग क्या जन की परवाह स्वप्न में भी कर सकते हैं। जिनका विश्वास बाडेबंदी में आलीशान होटलों में रखने में आस्वाद मुंह लग गया है। वे चीते-शेर को नुमायशी बनाकर पिंजड़े में डाल उसे भरपूर मांस उपलब्ध कराने लगते हैं और शेर ठसाठस मु त का राशन पानी या सरकसी बनने में गौरव पाते हैं। जनता लगातार ऐसे नुमायशी प्रतिनिधि को अपना बेशकीमती वोट देकर अपने खुशहाल होने का स्वप्न देखती है। पुष्पा आज तेरी याद बहुत आ रही है। तूने ठीक कहा था कि जिनके हितों की हिफाजत में हवाशून्य ऊंचाईयों पर जहां उंगली अगर बाहर निकल जाए तो वह शून्य होने लगती है अथवा गलने लगती है। दुर्भाग्य है, इन आयोजकों का नजर नहीं आता कि जनशून्य इलाकों में पहरा क्यों रखा है? क्यों सरहद की सुरक्षा में बेशुमार मानव शक्ति और धन की शक्ति का अपव्यय किया जा रहा है। काश ऐसा कार्य जनता के हितों और उनको ऊंचा उठाने में किया जाता। दो महायुद्धों के विनाश से भी जिनकी आंखें नहीं खुलीं। जन देश सुरक्षा के नाम पर भयानक से भयानक हथियार बनाकर जो देशों को बेच रहे हैं, वे क्या मानव जाति के हत्यारे नहीं हैं। उन्होंने कैसे विवश कर दिया कि समूचे विश्व को लोकतंत्र के नाम पर जनप्रतिनिधि बनकर। पुष्पा अब मैं प्रेतात्मा हूं, सब जगह आ जा सकता हूं और राष्ट्र निर्माताओं के अंदर झांक कर जान रहा हूं कि हर युग के अंत में जि मेदार ऐसे जन प्रतिनिधि, सम्राट-राजा-महाराजा सामंत आदि रहे हैं। काश मेरी यह चिठ्ठी तू कहीं छपवा सके तो मानव सच को जान सकेगा कि साम्राज्य के आतंक ने कैसे सवारी कर रखी है।

डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
हिरन मगरी, उदयपुर
editormahisandesh@gmail.com

मांझी नैया ढूंढे किनारा : यूनुस परवेज

शिशिर कृष्ण शर्मा
फ़िल्म इतिहासकार
9821394486

सिनेमा का नाटकों से रिश्ता शुरू से ही रहा है। ख़ासतौर से बोलते सिनेमा की तो बुनियाद ही रंगमंच पर टिकी हुई थी। गुज़रे दौर के मास्टर निसार, जहां आरा कज्जन, सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, बलराज साहनी, ए.के. हंगल, संजीव कुमार से लेकर नसीरूद्दीन शाह, ओम पुरी, शबाना आज़मी, अमोल पालेकर और आज के नवाज़ुद्दीन सिद्दीक़ी और राधिका आप्टे तक बेशुमार अभिनेता-अभिनेत्रियों ने नाटकों की दुनिया से फ़िल्मों में कदम रखा और अपनी बेहतरीन पहचान बनाई। ऐसे ही कलाकारों में से एक थे चरित्र अभिनेता यूनुस परवेज़ जो 1970 से 90 के तीन दशकों के हिन्दी सिनेमा का एक जाना-पहचाना चेहरा थे। यूनुस परवेज़ अपनी स्क्रीन इमेज के ठीक विपरीत एक उच्च शिक्षा प्राप्त और बेहद ज़हीन शख़्स थे जो कुछ समय के लिए राजनीति में भी सक्रिय रहे। उनसे मेरी मुलाक़ात फ़रवरी 2004 के मध्य में, मुम्बई के पश्चिमी उपनगर मीरा रोड के नया नगर क्षेत्र स्थित उनके फ्लैट में हुई थी। संयोग से वो मेरे घर से बामुश्किल डेढ़ किलोमीटर के फ़ासले पर रहते थे। 'साप्ताहिक सहारा समय' के मेरे कॉलम 'क्या भूलूं क्या याद करूं' के लिए हुई उस मुलाक़ात के दौरान उन्होंने अपनी निजी और व्यावसायिक ज़िंदगियों के बारे में बेलाग बातचीत की थी।

मूलतः उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर ज़िले के रहने वाले यूनुस परवेज़ का जन्म 10 अगस्त 1936 को मिर्ज़ापुर में हुआ था। उनके पिता पुलिस की नौकरी में थे। हर दो-चार साल में पिता के ट्रांसफर की वजह से यूनुस परवेज़ की स्कूली शिक्षा पूर्वी उत्तरप्रदेश के अलग-अलग शहरों में हुई और फिर आगे की पढ़ाई के लिए वो इलाहाबाद चले आए। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया था, 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मुझे डॉ. हरिवंशराय बच्चन, डॉ. राही मासूम रज़ा और फ़िराक़ गोरखपुरी जैसे उच्चकोटि के शिक्षाविदों से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। उन्हीं दिनों मेरा जुड़ाव रंगमंच से हुआ और बी.ए. और फिर उर्दू में एम.ए. करने के साथ-साथ मैं कॉलेज के नाटकों में भी पूरे जोशोख़रोश के साथ हिस्सा लेने लगा।'

यूनुस परवेज़ ने 'इंटरसिटी यूथ फेस्टिवल' में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही लगातार तीन बार 'बेस्ट एक्टर' का पुरस्कार भी

जीता। अखबारों में तस्वीरें और इंटरव्यू छपने लगे तो बतौर रंगकर्मी उनकी व्यापक पहचान बन गयी। उनका कहना था, 'एम.ए. करने के बाद मैं पी.एच.डी. की तैयारियों में जुट गया था। उसी दौरान मशहूर लेखक दीवान वीरेन्द्रनाथ से मिलने का कार्यक्रम बना तो कुछ दिनों के लिए दिल्ली चला आया। दीवान वीरेन्द्रनाथ रिश्ते में अभिनेता कबीर बेदी के चाचा थे। एक शाम वीरेन्द्रनाथ जी मुझे अपने साथ रूसी दूतावास में आयोजित एक पार्टी में लेकर गए जहां मेरी मुलाक़ात उस ज़माने के मशहूर रंगकर्मियों बेगम कुदसिया ज़ैदी, हबीब तनवीर, माईम आर्टिस्ट इरशाद पंजतन, और लेखक-कवि नियाज़ हैदर से हुई। उस साल मुझे उत्तरप्रदेश का बेस्ट एक्टर अवार्ड मिला था और ये सभी लोग मेरे नाम से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे। उनके कहने पर मैं पी.एच.डी.का इरादा त्यागकर बेगम कुदसिया ज़ैदी के 'हिन्दुस्तानी थिएटर' में शामिल हो गया। ये साल 1959 का वाक़या है।'

नियमित सरकारी सहायता प्राप्त 'हिन्दुस्तानी थिएटर' की बुनियाद पंडित जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा से रखी गयी थी। यूनुस परवेज़ क़रीब 4 सालों तक 'हिन्दुस्तानी थिएटर' से जुड़े रहे। उस दौरान उन्होंने हबीब तनवीर, एम.एस.सथ्यू और नरेंद्र शर्मा जैसे नामी रंगकर्मियों के साथ मिलकर इस बैनर के कई नाटकों में हिस्सा लिया। वो कहते थे, ÷पंडित नेहरू, डॉ.ज़ाकिर हुसैन, कृष्ण मेनन और एस.के.पाटिल जैसे बड़े नेता अक्सर हमारे नाटकों की तैयारियां देखने तो आते ही थे, हरेक नाटक के मंचन के बाद प्रधानमंत्री निवास में पार्टी का आयोजन भी किया जाता था। एक बार मिस्र के राष्ट्रपति नासिर के सम्मान में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्रप्रसाद ने हमारे नाटक 'शकुन्तला' का विशेष शो भी रखवाया था।

'हिन्दुस्तानी थिएटर' अपने उरूज़ पर था कि तभी बेगम कुदसिया ज़ैदी महज़ 44 बरस की उम्र में हार्ट अटैक से गुज़र गयीं। उधर भारत-चीन युद्ध की वजह से पंडित नेहरू के साथ साथ समूचे सरकारी तंत्र का ध्यान भी 'हिन्दुस्तानी थिएटर' की तरफ़ से हट चुका था। नतीजतन 'हिन्दुस्तानी थिएटर' पूरी तरह बिखर गया। ऐसे में कई अन्य साथियों की तरह यूनुस परवेज़ को भी बेहतर भविष्य की तलाश में मुम्बई चले आना पड़ा। ये साथ 1964 का वाक़या है। मुम्बई आकर यूनुस परवेज़ ने 'इप्टा' की सदस्यता ले ली और

ख्वाजा अहमद अब्बास, सागर सरहदी, बलराज साहनी और रमेश तलवार जैसे रंगकर्मियों के साथ एक बार फिर से रंगमंच पर सक्रिय हो गए।

यूनुस परवेज़ ने बताया था, 'साल 1968 में रिलीज़ हुई 'हसीना मान जाएगी' मेरी डेब्यू फ़िल्म थी। प्रकाश मेहरा की भी बतौर निर्देशक ये पहली फिल्म थी। फिर मुझे राजश्री प्रोडक्शन्स की साल 1971 की फिल्म 'उपहार' में मांझी की भूमिका मिली। इस फ़िल्म का मशहूर गीत 'मांझी नैया ढूंढें किनारा' मुझ पर फिल्माया गया था। मेरा संघर्ष जारी था। उस दौरान मैंने कुछेक फिल्मों में छोटे छोटे रोल किये। और फिर साल 1973 में आयी बहुचर्चित फ़िल्म 'गर्म हवा', जिसमें मैंने एक अवसरवादी नेता की भूमिका की थी। इस फ़िल्म ने मुझे प्रबुद्धवर्ग में तो पहचान दी ही, इस भूमिका के लिए मुझे यू.पी.जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सम्मानित भी किया गया। लेकिन आम दर्शकों के बीच मेरी पहचान बनी 1975 की फ़िल्म 'दीवार' से। इस फ़िल्म में रहीम चाचा की मेरी भूमिका को दर्शकों ने बेहद पसंद किया था। फ़िल्म 'दीवार' की ज़बरदस्त कामयाबी के बाद मैं लगातार व्यस्त होता चला गया।'

साल 1975 से 1995 के बीच यूनुस परवेज़ का करियर अपनी बुलंदियों पर रहा। उस दौरान उन्होंने अमिताभ बच्चन की तकरीबन सभी फ़िल्मों और 'बी.आर.फिल्म्स' की 'निकाह', 'द बर्निंग ट्रेन', 'इन्साफ का तराजू', 'आवाम' और 'दहलीज़' के अलावा 'ज़ख़्मी', 'आलाप', 'अंगूर', 'आशा', 'अवतार', 'उमरावजान', 'गोलमाल', 'मांग भरो सजना', 'बाज़ार', 'लैला', 'त्रिदेव', 'मोहरा', 'जाल' और ए.बी.सी.एल. कंपनी की 'तेरे मेरे सपने' समेत क़रीब साढ़े तीन सौ फिल्मों में काम किया। 2005 में रिलीज़ हुई 'बंटी और बबली' और 2007 में बनी भोजपुरी फ़िल्म 'बांके बिहारी एम.एल.ए.' उनकी अंतिम प्रदर्शित फ़िल्मों में से थीं।

अभिनय के अलावा राजनीति में भी यूनुस परवेज़ की गहरी दिलचस्पी थी। छात्र जीवन में वो कॉलेज की राजनीति में सक्रिय थे। वो बताते थे, 'साल 1984 में सुनील दत्त ने अपना पहला चुनाव लड़ा तो उस दौरान वो मुझे भी सक्रिय राजनीति में ले आए और मैंने भी कांग्रेस की सदस्यता ले ली। फिर कुछ ख़ास वजहों से मुझे कांग्रेस छोड़कर समाजवादी पार्टी में जाना पड़ा जिसके टिकट पर मैंने साल 1998 का लोकसभा चुनाव भी लड़ा। लेकिन फिर मैं वापस कांग्रेस में लौट आया। मेरे परिवार में पत्नी के अलावा एक बेटा और तीन बेटियां हैं। बेटा अरशद खान फिल्म निर्देशक है और तीनों बेटियों का विवाह हो चुका है।'

यूनुस परवेज़ का निधन 71 साल की उम्र में 11 फ़रवरी 2007 को अनियंत्रित डायबिटीज़ की वजह से उनके मीरा रोड स्थित निवास पर हुआ।

भारतीय वायु सेना से मिली हौसलों को उड़ान

- डॉ. सुरेन्द्र भास्कर

रोहित कृष्ण नंदन

जब बढ़े कदम

जब आप सपने देखते हैं और उन सपनों को पूरा करने के लिए जी-जान से जुट जाते हैं, तो देखे गए सपने जरूर साकार होते हैं, मूल रूप से राजस्थान के सीकर जिले के गांव घस्सू की ढ़ाणी गोविंदकृपा के रहने वाले डॉ. सुरेन्द्र भास्कर का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा से भरा है। बारहवीं कक्षा पास करते ही वर्ष 1995 में महज 17 वर्ष की उम्र में इनका चयन एयर वॉरियर के रूप में भारतीय वायु सेना में हो गया। इन्होंने लगातार 20 वर्ष की उत्कृष्ट राष्ट्र सेवा के बाद वर्ष 2015 में सार्जेंट के पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली। इस दौरान डॉ. सुरेन्द्र भास्कर देश के अनेक स्थानों पर पदस्थापित रहे। एयर फोर्स छोड़ने के बाद वर्ष 2016 में राजस्थान सरकार ने इन्हें संवैधानिक संस्था बाल कल्याण समिति, सीकर के लिए सदस्य मनोनीत किया। इसी वर्ष इन्होंने राजस्थान स्कूल व्याख्याता परीक्षा में समाज शास्त्र विषय में राज्य में 7वां स्थान प्राप्त किया। समाजशास्त्र के व्याख्याता के रूप में डॉ. सुरेन्द्र भास्कर बाडमेर जिले के सिवाना कस्बे में उच्च माध्यमिक विद्यालय, महिलावास में पदस्थापित हुए। लगभग दो साल के अध्यापन के बाद ये राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग में सहायक निदेशक के पद पर प्रतिनियुक्त हुए।

इस दौरान इन्होंने कॉलेज शिक्षा के लिए असिस्टेंट प्रोफसर व राजस्थान प्रशासनिक सेवा की परीक्षा भी प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण की। वर्तमान में ये आरटीएस (राजस्थान तहसीलदार सेवा) में अपने गृह जिले सीकर में सहायक भू-प्रबंध अधिकारी के रूप में पदस्थापित हैं।

भारतीय वायु सेना ने दी जीवन को नई राह

डॉ. सुरेन्द्र भास्कर कहते हैं कि भारतीय वायु सेना ने व्यक्तित्व विकास के साथ मुझे ज़िंदगी को ज़िंदादिली से जीना सिखाया, वायु सेना ने एक गुरु की भूमिका का निर्वाह करते हुए मेरे जीवन में अमिट छाप छोड़ी है, इसलिए मैं अपनी हर सफलता का श्रेय अपने परिवार, दोस्तों के साथ भारतीय वायु सेना को भी देता हूं। भारतीय वायु सेना में सर्विस के दौरान इन्होंने चार बार स्नातकोत्तर की पढ़ाई, दो विषयों में नेट व सेट, एमएड, बीजेएमसी, एमबीए की डिग्रियां हासिल कीं। इसके अलावा इनके पास कई डिप्लोमा एवं अनेक प्रकार के प्रशिक्षणों का भी अनुभव है। वर्ष 2010 में डॉ. सुरेन्द्र भास्कर जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर से ग्रामीण महिलाओं की जागरूकता में जनसंचार की भूमिका विषय पर पीएचडी की उपाधि भी प्राप्त कर चुके हैं।

डॉ. सुरेन्द्र भास्कर भारत के अकेले ऐसे एयर वॉरियर हैं जिन्होंने सैन्य सेवा में रहते इतनी डिग्रियां हासिल कीं, इस कारण इनका नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्डस में शामिल किया गया है। डॉ. भास्कर का युवाओं से यह कहना है कि भारतीय वायु सेना से बेहतर कोई कैरियर नहीं है। अगर आपको अपनी जिंदगी बनानी है तो वायु सेना में शामिल हो जाओ आप कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। आपके व्यक्तित्व में स्वतः निखार आएगा, क्योंकि मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता और जब आप मेहनत करते हैं तो वह जरूर रंग लाती है। इनका कहना है कि राष्ट्र सेवा के लिए सरकार को दो साल का सैन्य प्रशिक्षण सभी युवाओं के लिए अनिवार्य कर देना चाहिए।

एक कुशल अधिकारी के साथ-साथ बेहतरीन लेखक भी...

डॉ. सुरेन्द्र भास्कर सहायक भू प्रबंध अधिकारी की विभागीय जिम्मेदारियों के साथ वर्तमान में सीकर जिले के कोविड कन्ट्रोल रूम में प्रभारी के रूप में सराहनीय सेवा देकर कोरोना योद्धा की वास्तविक भूमिका को चरितार्थ कर रहे हैं। लिखने के अलावा इन्हें खेलने, संगीत एवं खेती के कार्य का भी बहुत शौक है। ड्यूटी के बाद सुबह-शाम का समय वे अपने परिवार के साथ शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर ढ़ाणी में गुजारते हैं जिससे काया निरोगी रहती है। इनकी पत्नी सरिता शिक्षिका हैं और दोनों बेटियां निष्ठा व आर्वी स्कूल में अध्ययनरत हैं। डॉ. सुरेन्द्र भास्कर अब तक सात किताबें लिख चुके हैं। इन किताबों का प्रकाशन देश-विदेश के प्रसिद्ध प्रकाशकों ने किया है। इसके अलावा इनकी तीन किताबें अभी प्रकाशित होने की प्रक्रिया में हैं।

प्रकाशित पुस्तकें

1. अधिगमकर्ता का विकास
2. बाल्यावस्था एवं विकास
3. समावेशी विद्यालयों का सृजन
4. शिक्षा मनोविज्ञान
5. बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र
6. राजस्थान पाठ्यपुस्तक मंडल की कक्षा-8 की अंग्रेजी माध्यम की सामाजिक अध्ययन की पुस्तक
7. Exploring The Opportunity And Challanges of women in India

इनकी अंतिम पुस्तक हाल ही में अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर से प्रकाशित हुई है। मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र की पुस्तकों के अलावा इनके विभिन्न सामाजिक एवं सम-सामयिक मुद्दों पर समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं में 40 से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में एक दर्जन से अधिक शोधपत्रों को प्रस्तुत करके प्रकाशित भी करवाया है।

समाज सेवा में भी निभा रहे सक्रिय भूमिका

डॉ. सुरेन्द्र भास्कर सेवियर एजुकेशन वेलफेयर एंड अवेयरनेस समिति (SEWA) नामक एनजीओ के संस्थापक भी हैं और समय-समय पर इस एनजीओ के जरिए समाज सेवा व

जागरूकता के कार्य करते रहते हैं। इस एनजीओ के जरिए स्वास्थ्य सेवा, युवाओं को मार्गदर्शन व फ्री कोचिंग तथा बेटियों को आगे बढ़ाने की जागरूकता को लेकर भी कई सामाजिक कार्य किए जाते हैं। डॉ. भास्कर बेटियों के लिए 'प्राइड पेरेन्ट्स' नामक एक ग्रुप का संचालन भी करते हैं जिसमें 90 से अधिक केवल बेटियों वाले परिवार हैं जिन्होंने बेटियों के जन्म तक अपने परिवार को सीमित कर रखा है।

किसान परिवार में जन्मे डॉ. सुरेंद्र भास्कर ने हाल ही में किसानों को उनकी फसल का वाजिब मूल्य दिलाने के लिए अपने एनजीओ के साथियों के साथ मिलकर kisansewa.org नामक एक पोर्टल लॉन्च किया है, जिस पर किसान ऑनलाइन माध्यम से अपने खेत से फसल सीधे बाजार में बेच सकते हैं।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथि : माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

Defence Entrance Exams & SSB Specialists

जल्द आ रहा है...
माही संदेश प्रकाशन का
साझा काव्य संग्रह
मन के भाव समंदर हैं...
अगर आप भी इस साझा काव्य संग्रह
में सम्मिलित होना चाहते हैं तो आपका स्वागत है
इच्छुक रचनाकार हमें
9828673031
या ईमेल पर सम्पर्क कर सकते हैं...
publicationmahisandesh@gmail.com

माही संदेश
मासिक पत्रिका
दस्तक दिल तक

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें
प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर
के पास, अजमेर रोड़, हीरापुरा, जयपुर 302021
(राजस्थान) । मो. 9887409303

सेवा में,

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक रोहित कृष्ण नन्दन द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाकलीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड़, जयपुर - 302021 से प्रकाशित किया। मो. 9887409303